बशीर बद्र



मुसाफ़िर

संकलन एवं संपादन : **सचिन चौधरी**



अल्लाह ने मेरे शौहर के सच इतने ख़ूबसूरत बनाए हैं कि लागों को झूठ लगते हैं।

- डॉ.राहत बद्र

मुसाफ़िर

बशीर बद्र

संकलन एवं संपादन: **सचिन चौधरी**

MANJUL

मंजुल पब्लिशिंग हाउस

First published in India by

MANJUL

Manjul Publishing House Pvt. Ltd.

Corporate & Editorial Office

• 2nd Floor, Usha Preet Complex, 42 Malviya Nagar, Bhopal 462 003 - India
Email: manjul@manjulindia.com Website: www.manjulindia.com

Sales & Marketing Office
• 7/32, Ground Floor, Ansari Road, Daryaganj, New Delhi 110 002
Email: sales@manjulindia.com

Distribution Centres
Ahmedabad, Bengaluru, Bhopal, Kolkata, Chennai, Hyderabad, Mumbai, New Delhi, Pune

Musafir by Bashir Badr

This edition first published in 2015

ISBN 978-81-8322-590-8

Compiled and edited by Sachin Choudhari

ग़ज़ल मतलब..................“डॉ. बशीर बद्र”

पैदाइश: 15 फ़रवरी सन् 1935 ई. बमुक़ाम कानपुर

बशीर बद्र की पैदाइश कानपुर में हुई, उनके बुज़ुर्ग ईरान से आए थे। लाहौर, दिल्ली वगैरा के बाद फ़ैज़ाबाद में मुक़ीम (निवासी) रहे। आज भी बशीर बद्र के ख़ानदान के लोग फ़ैज़ाबाद लखनऊ में रहते हैं। डॉ. बशीर बद्र की वालिदा का नाम आलिया बेगम और वालिद का नाम शाह मो. नज़ीर था। बशीर बद्र जब दसवीं जमाअत (कक्षा) में पढ़ते थे तब उनके वालिद इस दुनिया से रुख़सत (विदा) हो गए और ख़ानदान की ज़िम्मेदारी बशीर बद्र के कंधों पर आ गई।

वालिद साहब की मौजूदगी में बशीर बद्र ने शायरी करना शुरू कर दिया था। उनका पहला शेर जिस पर उनके वालिद ने नाराज़ होकर शायरी करने से मना किया था वो ये है:

हवा चल रही है उड़ा जा रहा हूँ
तेरे इश्क़ में मैं मरा जा रहा हूँ

(डॉ. बशीर बद्र, उम्र ग्यारह बरस)

बशीर बद्र शुरू से ही मौज़ूं-तबा (योग्य) थे। उनका ये शेर इस बात की तरफ़ इशारा करता है कि आशिक़ मिज़ाज होने के साथ-साथ हवा के दोश पर उड़ना और ज़माने के साथ चलना चाहते हैं। बशीर बद्र ग़ज़ल के मक़बूल-तरीन (सर्वप्रिय) शायर हैं और हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के नुमाइंदा रसाइल में बशीर बद्र की ग़ज़लें पाबंदी से शाए (छपती) होती रहती हैं। बशीर बद्र की मक़बूलियत (लोकप्रियता) का राज़ ये भी है कि वो मुशायरों के भी बहुत मक़बूल शायर हैं लेकिन अदबी हलकों में उनकी हद दर्जा-पज़ीराई (स्वीकृति) की जाती रही है। यही वजह थी कि अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी में एम.ए. उर्दू निसाब में उनकी ग़ज़लें शामिल रही हैं।

बशीर बद्र को सन् 1984 ई. में कराँची के एक मुशायरे में बुलाया गया। उस वक़्त शायक़ीन मुशायरे का कहना था कि बशीर बद्र मुशायरा लूट लेते हैं। उनके कलाम के साथ उनकी आवाज़, तरन्नुम और अंदाज़ से लोग उनके दीवाने हो जाते हैं।

रोज़नामा अमन कराँची 13 मई सन् 1984 ई. (सफ़हा नं. 5) में बशीर बद्र के लिये लिखा है:

"बशीर बद्र अवामो-ख़्वास में यकसाँ मक़बूल हैं। कराँची में ग़ज़ल के आशिक़ उनके आशिक़ हैं। अभी सखर के पाको हिन्द मुशायरे में उनको तारीख़साज़ क़ामियाबी मिली। हज़ारों अफ़राद उनके एहतराम में खड़े होकर उनको दोबारा आने की दावत देते रहे... बशीर बद्र जितना हिन्दुस्तान में पसंद किये जाते हैं उतना ही पाकिस्तान के अवामो-ख़्वास उनसे मोहब्बत करते नज़र आते हैं।"

ग़ज़ल की शायरी में अंग्रेज़ी से आए हुए लफ़्ज पूरी संजीदगी और शायराना तग़ज़्ज़ुल के साथ बशीर बद्र की ग़ज़ल में सबसे पहले आए। अब हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के अक्सर नये शोअरा ने बशीर बद्र का उसलूब (शैली) इख़्तियार कर लिया है:

ये ज़ाफ़रानी "पुलोवर" उसी का हिस्सा है
कोई जो दूसरा पहने तो दूसरा ही लगे

❖

कोई फूल धूप की पत्तियों में "हरे रिबन" से बंधा हुआ
वो ग़ज़ल का लेहजा नया-नया, ना कहा हुआ ना सुना हुआ

❖

यहाँ लिबास की क़ीमत है आदमी की नहीं
मुझे "गिलास" बड़े दे शराब कम कर दे

❖

"रेल" की पटरी पर मिरी शोहरत रख दी
"बस" के पहियों से रोज़ी रोटी बांधी

इस इन्फ़िरादियत से अलग बशीर बद्र का एक इम्तियाज़ ये भी है कि गुज़िश्ता पचास साल में उनके लातादाद अशआर ग़ैर-मामूली तौर पर मशहूर हुए और तमाम लिसानी हुदूद को तोड़कर दुनिया भर में पसंद किये गये जहाँ उर्दू ग़ज़ल के शायक़ीन मौजूद हैं। उनमें से बतौर नमूना चंद शेर पेश हैं:

उजाले अपनी यादों के हमारे साथ रहने दो
ना जाने किस गली में ज़िन्दगी की शाम हो जाए

❖

दुश्मनी जम कर करो लेकिन ये गुंजाइश रहे

जब कभी हम दोस्त हो जायें तो शर्मिन्दा ना हों

लोग टूट जाते हैं एक घर बनाने में
तुम तरस नहीं खाते बस्तियाँ जलाने में

मुख़ालिफ़त से मिरी शख़्सियत सँवरती है
मैं दुशमनों का बड़ा एहतिराम करता हूँ

कोई हाथ भी ना मिलाएगा जो गले मिलोगे तपाक से
ये नये मिज़ाज का शहर है ज़रा फ़ासले से मिला करो

बशीर बद्र ने बोलचाल की ज़बान का जो पुर-असर लेहजा दरयाफ़्त किया है उसकी वजह से उनकी उर्दू रस्मुल-ख़त (उर्दू लिपि) में तो कई किताबें हैं लेकिन इस के अलावा हिन्दी, पंजाबी, गुजराती, अंग्रेज़ी और दीगर ज़ुबानों में उनके इन्तेख़ाबात शाये (छप) हो चुके हैं।

बशीर बद्र के मुताल्लिक़ चंद मोतबर-तरीन नक़्क़ादों (प्रतिष्ठित आलोचको) की राय रिसाला "शायर" मुम्बई जिल्द 54, शुमारा नम्बर 4, सन् 1983 ई. में शाए हुई हैं जो दर्ज ज़ेल हैं:

मोहम्मद हसन:

> "ग़ज़लगो की हैसियत से बशीर बद्र की सलाहियतों पर ईमान ना लाना कुफ़्र है।"

आले अहमद सुरूर:

> "नई ग़ज़ल में हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में जो नाम बहरहाल आयेंगे उनमें बशीर बद्र का नाम भी होगा।"

निदा फ़ाज़ली:

> "बशीर बद्र की आवाज़ दूर से पहचानी जाती है, ये बहुत बड़ी बात है।"

वैसे तो बशीर बद्र के कई शेर बहुत मक़बूल हुए लेकिन उजाले अपनी यादों के........शेर की शोहरत बशीर बद्र की अपनी शोहरत से कई गुना ज़्यादा बड़ी है क्योंकि

सवारियों से लेकर दफ़्तरों, लीडरों और तालिबे-इल्मों तक हर जगह ये शेर नज़र आ जाता है और पहुँच जाता है। यहाँ एक वाक़िया राक़िमुल हुरूफ़ के साथ भी पेश आया जब मैंने अपने एक उस्ताद से उनका ऑटोग्राफ़ लिया तो उन्होंने मुझे बशीर बद्र का यही शेर लिख कर दिया:

उजाले अपनी यादों के हमारे साथ रहने दो
ना जाने किस गली में ज़िन्दगी की शाम हो जाए

मेरी दुआ है कि तुमको ज़िन्दगी में क़ामियाबी मिले।

दुआगो डॉ. मो. शरीफ ख़ाँ, 2 मई सन् 1975 ई.

इसमें दिलचस्प बात ये थी कि ना मुझे मालूम था कि ये किसका शेर है ना मेरे उस्ताद को। इस शेर की शोहरत का ये आलम था कि उसने अपने शायर की शोहरत को बहुत पीछे छोड़ दिया।

बशीर बद्र ने शायरी की तजुर्बागाह में एक और तजुर्बा किया था जिसको उन्होंने "नसरी ग़ज़ल नाम दिया था लेकिन इस तजुर्बे से वो ख़ुद मुतमइन नहीं थे इसलिये चंद नस्री ग़ज़लें लिखकर इस तजुर्बे को तर्क कर दिया। माहनामा फ़ुनून" मई सन् 2008 ((Vol. 111) Issue V) औरंगाबाद में अलीम सबा नवेदी का मज़मून... "उर्दू शायरी में हैयती तज़ुर्बे" में उन्होंने लिखा है:

"उर्दू ग़ज़ल से जिस तरह आज़ाद ग़ज़ल का वजूद हुआ

उसी तरह "नसरी ग़ज़ल" भी वजूद में आई जिसके मोजिद बशीर बद्र हैं, उनकी नसरी ग़ज़लें हफ़्त रोज़ा "मोर्चा" (गया) 8 जुलाई सन् 1972 ई. में शाए हुईं। मौसूफ़ ने अपनी नस्री ग़ज़लों के मुख़्तलिफ़ नमूने (Sample) रखे हैं।

मसलन:

1. ऐसा ताक़तवर तख़लीक़ी तजुर्बा जिसे पुराने आहंग के साथ मुरत्तिब होने की क़तई ज़रूरत ना हो।
2. ऐसे बराबर मिसरे जिनकी तक़तीअ की जाए तो नए वज़न में बराबर होंगे मगर मरवज्जा शेरी औज़ान के मुताबिक़ न हों।
3. नसरी फ़िक्र या जुमले जो शायरी हैं मगर पुरानी नस्र में कम हैं उनको मिसरा मानकर शेरी ग़ज़लें कहना।

ग़ालिबन मौसूफ़ ने बीस नसरी ग़ज़लें कही हैं जिनमें सिर्फ़ चार नसरी ग़ज़लें "मोर्चा" के लिए रवाना की थीं। उनकी नसरी ग़ज़लों में महाकाती और अफ़सानवी ढंग है। अल्फ़ाज़ में खुरदुरापन कहीं-कहीं

ज़बान में सतही पन ऊद कर आया है। शायद जानबूझकर इस ज़बान और ढंग को नसरी ग़ज़ल का लाज़िमा क़रार दिया हो। उनका ख़्याल है कि ग़ज़ल की हज़ार तहें हैं उनकी ऊपरी तहों में एक ऐसी दलदली तह है जिसमें कुंद ज़हन हाथ पांव मारता और धँसता रहता है और शायर तमाशा देखना पसंद करता है। मगर नाचीज़ ने जो नसरी ग़ज़लें कही हैं उनमें इन दलदली तहों का शायबा दूर तक नहीं मिलता।"

(माहाना फ़ुनून, औरंगाबाद, मई सन् 2008 ई.)

बशीर बद्र ने अपने शेरी सफ़र के इब्तिदाई दौर में नज़्में भी लिखीं जो माहनामा "शायर" मुम्बई सितम्बर सन् 1951 ई. में "माज़ी व हाल" के उनवान से छपीं। "ग़ालिब से शिकायत" नई क़दरें हैदराबाद पाक जिल्द नं. 3 शुमारा नं. 6, सफ़हा नं. 98 पर शाए हुई थीं। इस नज़्म का आख़िरी शेर था:

"ये यक़ीं रखिये बहरहाल हमें मिलना है
जैसे तारीख़ के अवराक़ बहम होते हैं"

डॉ. रफ़अत सुल्तान की किताब "बशीर बद्र नई आवाज़" जो सन् 2001 ई. में शाए हुई है, सफ़हा नं. 104 पर लिखती हैं:

"बशीर बद्र ने ग़ज़ल के मिज़ाज के किरदार ग़ज़ल की नज़ाक़त, मासूमियत और तक़द्दुस को मजरूह किये बग़ैर नई सोच नये लहजे के साथ असरी हिसियत को इस तरह गिरफ़्त में लिया है कि शेर की अदबी मतन को पस मंज़र में जाने नहीं दिया, ये एक मुश्किल काम था। इस मुश्किल को हल करने के लिये उन्होंने अपने तजुर्बात और मुशाहिदात की बुनियाद तआक़कुल के बजाए विजदान पर रखी इसीलिये उनकी ग़ज़ल की जड़ें दिल की गहराईयों में उतरी हुई हैं। दिल की मिट्टी को नर्म करने के लिए आँसुओं का बहाव उल्टी तरफ़ होता है, शेर:

अब के आँसू आँखों से दिल में उतरे
रुख़ बदला दरिया ने कैसे बहने का

बशीर बद्र ने नई ग़ज़ल को लफ़्ज़ी और मानवी सतह पर बहुत कुछ दिया है।"

(नई आवाज़-डॉ. रफ़अत सुल्तान)

बशीर बद्र अपनी ग़ज़ल की मुताद्दिद किताबों के साथ-साथ मुशायरों के मक़बूल शायर हैं। यही वजह है कि मुशायरों के असरात ने उनकी शायरी कि ज़बान, उसलूब और लेहजे को बदल कर रख दिया। "आमद" और इमेज" की ग़ज़लें फ़ारसी तरकीबों से और इज़ाफ़तों से पाक होने लगीं वर्ना उनकी ग़ज़लों के पहले मजमुए "इकाई" में बेशुमार अल्फ़ाज़ फारसी

तरकीबों से बोझिल नज़र आते हैं। बशीर बद्र "आमद" में ख़ुद लिखते हैं:

"अब ग़ज़ल का आलमी और जदीद मंज़रनामा फ़ारसी-ज़दा उर्दू ग़ज़ल के तरीक़ए कार और मंज़रनामें से मुख़तलिफ़ हो चला है, ये कारनामा मेरा है कि मेरी ग़ज़ल इस सफ़र का आग़ाज़ थी।"

बशीर बद्र की और बहुत सी ख़ूबियों के साथ कि वो साफ़ दिल इंसान हैं, ग़ुस्सा उन्हें कम आता है। सलीक़ा और सादगी के साथ मिज़ाज में इन्केसारी, बेहद रहमदिल और मेहरबान इंसान हैं। दुश्मन किसी को समझते नहीं और अगर उनको समझा दिया जाए कि फ़लाँ इंसान दुश्मनी कर रहा है तो भी मुश्किल से इसका यक़ीन करना। हर एक पर हद दर्जा ऐतिमाद, उनकी ज़िन्दगी की कोई बात कभी राज़ नहीं रही। खुली किताब की तरह उनकी अदबी और घरेलू ज़िन्दगी हैं। कम दर्जे पर कोई भी काम करना कभी भी मंज़ूर नहीं हुआ। यही वजह थी कि ज़िन्दगी के हालात साज़गार होने के बाद देर से एम.ए. और फिर पी.एच.डी. करने अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी पहुँचे।

बशीर बद्र ने सन् 1969 ई. में अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी से इम्तियाज़ी तौर पर उर्दू में एम.ए. किया। इम्तियाज़ात में ये शामिल है कि जब सन् 1968 ई. में बशीर बद्र ने एम.ए. प्रीवियस किया तो एम.ए. के तमाम दूसरे मज़ामीन के टॉपर्स तुल्बा में सबसे ज़्यादा नंबर लाने का रिकॉर्ड बशीर बद्र का था तब उन्हें इंग्लैण्ड के एक प्रोफ़ेसर के नाम से "सर विलियम मार्क्स स्कॉलरशिप" मिली। इसके बाद सन 1969 ई. में तमाम एम.ए. (फ़ायनल) के मज़ामीन के तुल्बा में टॉप करने वालों में अव्वल आए तो "राधाकृष्णन प्राइज़" मिला। तालीमी सिलसिला जारी रखते हुए प्रोफ़ेसर आले अहमद सुरूर की निगरानी में पी.एच.डी. का मक़ाला "आज़ादी के बाद की ग़ज़ल का तनक़ीदी मुतालिआ" लिखा। सन 1972 ई. में डॉक्ट्रेट की डिग्री मिलने के बाद वहीं लेक्चरर हो गए। कुछ अर्से बाद अलीगढ़ से मेरठ कॉलेज में रीडर और सद्र शोअबा उर्दू की हैसियत से दर्सो-तदरीस में लगे रहे। इसमें शक नहीं कि बशीर बद्र की ग़ज़ल मक़बूले-ख़ासो-आम है। वो उर्दू ग़ज़ल के मेहबूब शायर तो हैं ही नाक़िदीन भी उनकी शायरी को नज़र अंदाज़ नहीं कर पाते।

बशीर बद्र जैसी तख़लीक़ी सलाहियत के शायर ग़ज़ल की दुनिया में बहुत कम हैं। ऐसे नौजवान शायर तो बहुत हैं जो मुशायरों में बशीर बद्र की नक़ल करके उनकी बेपनाह मक़बूलियत से रश्को-हसद करते हैं और उनके बनाए हुए उसलूब पर चलने की कोशिश कर रहे हैं।

इब्तिदा से अभी तक बशीर बद्र की ग़ज़ल में एक नयापन मिलता है। "इकाई" की शायरी के बाद बशीर बद्र के कलाम में इज़ाफ़त नहीं मिलती। उनकी ग़ज़ल रिवायती, अलामती इज़हारात से आरी है। अपने जज़्बे और अहसास की आहटों को उन्होंने तख़य्युल की निगेहदारी में इस तरह समेटा है कि उनकी ग़ज़ल में पैकरों का जल-तरंग सा सुनाई देता है।

बशीर बद्र इस्तेआराती और तमसीली इज़हार से मुनासिबत के बावजूद वो तशबीह से मुन्हरिफ़ नहीं होते और उससे पैकर-आफ़रीनी का काम लेते हैं लेकिन उनके अशआर में

महसूस होता है कि तजुर्बे की ताज़गी ने अज़-ख़ुद-मौज़ूँ तशबीहात तलाश कर ली हैं। ऐसी तशबीहात जो दूसरे शोअरा के यहाँ नायाब हैं,

मसलन:

बातें कि जैसे पानी में जलते हुए दिये
कमरे में नर्म नर्म उजाला सा भर गया

रात की भीगी भीगी छतों की तरह
मेरी पलकों पे थोड़ी नमी रह गई

बशीर बद्र के यहाँ रात का पैकर बेहद नुमायाँ है। लगता है कि शायरी की अंदरूनी उदासी और रात का गहरा रिश्ता है। उनके यहाँ रात अक्सर ख़नक चाँदनी और झिलमिल करते तारे साथ लाती है। उनके यहाँ रात ख़्वाब के गाँव बसाती है रूमानी अंग्रेज़ी फ़िज़ा पैदा करती है।

बोझल उदास रात थी दोनों दिलों के बीच
हम मुस्कुरा दिये तो उजाले बरस पड़े

पीछे पीछे रात थी तारों का इक लश्कर लिये
रेल की पटरी पे सूरज चल रहा था रात को

रात भीगी तो थके शहर को याद आने लगे
नींद के गाँव जो आबाद हैं पलकों के तले

याद जब घर की कभी आती है तो लगता है
रात की राह में शीशे का मकाँ रोशन है

बशीर बद्र के यहाँ कई ऐसे अल्फ़ाज़ बार बार आते हैं जो क़ारी को बहुत मुतास्सिर

करते हैं मसलन बर्फ़, हवा, चांद, सितारे, जुगनू, दरिया, धूप, घर, सुबह, शाम, गाँव वग़ैरा वग़ैरा। बशीर बद्र की ग़ज़ल से पहले ग़ज़ल में गाँव दाखिल नहीं हुआ था। बशीर बद्र ने अपनी ग़ज़ल में गाँव की मासूम सीधी साधी ज़िन्दगी की तस्वीरें दिखाई हैं,

मसलन:

धूप खेतों में उतर कर ज़ाफ़रानी हो गई
सुरमई अशजार की पोशाक धानी हो गई

धूप में खेत गुनगुनाने लगे
जब कोई गाँव की जियाली हँसी

मेरी मुट्ठी में सुलगती रेत रख कर चल दिया
कितनी आवाज़ें दिया करता था ये दरिया मुझे

सर पर खड़े हैं चांद सितारे बहुत मगर
इंसान का जो बोझ उठाले ज़मीन है

मैं तमाम तारे उठा उठा के ग़रीब लोगों में बाँट दूँ
कभी एक रात वो आसमाँ का निज़ाम दे मेरे हाथ में

मिरा क्या कहीं भी चला जाऊँगा
मगर रास्ता तो बना जाऊँगा

अजीब शख़्स है नाराज़ हो के हँसता है
मैं चाहता हूँ ख़फ़ा हो तो वो ख़फ़ा ही लगे

बशीर बद्र बहुत ज़्यादा हस्सास, इंसान दोस्त और दर्दमंद शायर हैं। वो अपनी शायरी में जिन रमूज़-ओ - इशारात से काम लेते हैं वो बहुत नाज़ुक और लतीफ़ होते हैं। बशीर बद्र आम इंसानों की तरह जीने का हुनर जानते हैं। बशीर बद्र ने बेशुमार अल्फ़ाज़ तख़लीक़ी हुस्न के साथ ग़ज़ल में दाख़िल कर दिये जिनको ग़ज़ल में इससे पहले क़ुबूल नहीं किया गया था। ज़फ़र इक़बाल ने भी कोशिश ज़रूर की थी लेकिन बशीर बद्र की कोशिषें ज़्यादा क़ामियाब और मक़बूल हुईं। बशीर बद्र के यहाँ बोलचाल के अल्फ़ाज़ ग़ज़ल में अपनी जगह ऐसे बना लेते हैं कि पढ़ने और सुनने वाले तारीफ़ किये बग़ैर नहीं रहते,

मसलन:

वो बाल्कोनी से आए तो रास्ता रुक जाए
सड़क पे चलने लगे तो हमारे जैसा है

सुनसान रास्तों से सवारी ना आएगी
अब धूल से अटी हुई लारी ना आएगी

गुज़ारे हम ने कई साल ऐसे दफ़्तर में
कुंआरी लड़की रहे जैसे ग़ैर के घर में

बहुत संभाल के रखा था नेक बीवी ने
हवा चली तो बुरादा बिखर गया घर में

बिल्डिंगें लोग नहीं हैं जो कहीं भाग सकें
रोज़ इन्सानों का सैलाब बढ़ा जाता है

बशीर बद्र की क़ामियाबी का राज़ ये है कि वो आम जज़्बात को बोलचाल की ज़ुबान में बड़ी सादगी और ख़ूबसूरती के साथ ग़ज़ल बना देते हैं। उनके कलाम में बनावट या तसन्नो नहीं है। उनके यहाँ अपनी मिट्टी की भीनी ख़ुशबू का एहसास और गाँव और क़स्बात की यादें भरी पड़ी हैं:

गीले गीले मंदिरों में बाल खोले देवियाँ

सोचती हैं उनके सूरज देवता कब आयेंगे

ग़ज़ल के मोअतबर नक़्क़ाद डॉ. यूसुफ़ हुसैन ख़ाँ ने अपनी मशहूर तनक़ीदी किताब “उर्दू ग़ज़ल” सफ़हा 751 के चौथे एडीशन का इख़्तिताम बशीर बद्र के इस शेर पर किया।

उजाले अपनी यादों के हमारे साथ रहने दो
न जाने किस गली में ज़िन्दगी की शाम हो जाए

कोई पचास साल से ज़्यादा उम्र का बशीर बद्र का ये शेर शोहरत के मुक़ाबले में बशीर बद्र की शोहरत से कई क़दम आगे निकल गया। इसकी वजह आम-फ़हम ज़बान में शेर का होना और शायक़ीन की सहल-पसंदी है। बशीर बद्र के यहाँ ऐसे कई अशआर मिल जायेंगे जो सादा ज़बान के साथ गहराई और मानवियत के लिहाज़ से बहुत अहम हैं,

मसलन:

मेरी शोहरत सियासत से महफ़ूज़ है
ये तवाइफ़ भी अस्मत बचा ले गई

ख़ुदा ऐसे एहसास का नाम है
रहे सामने और दिखाई ना दे

जी बहुत चाहता है सच बोलें
क्या करें हौसला नहीं होता
कुछ तो मजबूरियाँ रहीं होंगी
यूँ कोई बेवफ़ा नहीं होता

कभी जब तुम्हारा ख़्याल आ गया
कई रोज़ तक बेख़याली रही

तुम अभी शहर में क्या नए आये हो
रुक गए राह में हादसा देखकर

सर पर ज़मीन ले के हवाओं के साथ जा
आहिस्ता चलने वालों की बारी ना आएगी

बशीर बद्र की ज़िन्दगी में हादसात भी बहुत आए जिनको उन्होंने बड़े ही हौसले के साथ बर्दाश्त किया और उनको अपने ऊपर हावी नहीं होने दिया। अशआर भी बहुत सलीक़े से कहे:

लोग टूट जाते हैं एक घर बनाने में
तुम तरस नहीं खाते बस्तियाँ जलाने में

बशीर बद्र अपने शेरी सफ़र से बहुत क़ामियाब गुज़रे हैं, उनकी शोहरत और हर दिल अज़ीज़ी का एक नमूना जो उनके घर में मौजूद है वो एक ऐसी चादर है जिस पर उनकी शायरी को पसंद करने वाली डॉ. अख़्तर जहाँ मलिक ने (जो दुबई में मुक़ीम हैं) 72 अशआर काढ़ कर दिये हैं। अपने हाथ से ख़ुश ख़त में पहले लिखा, इसके बाद इसको रेशम से काढ़ा। ये चादर उन्होंने “जश्ने बशीर बद्र सन 2000 ई.” के मौक़े पर बशीर बद्र को पेश की थी। इस चादर पर 28 सितम्बर सन 2000 तारीख़ भी लिखी हुई है।

बशीर बद्र के शेरों में मानवियत, मासूमियत और क़ारी के लिये कुछ न कुछ दिलचस्पी का सामान ज़रूर होता है जिसे पढ़कर बेसाख़्ता मुँह से यही निकलता है कि ये तो मेरे दिल की बात है। मसलन ये शेर मुलाहिज़ा हों:

पहली बार नज़रों ने चांद बोलते देखा
हम जवाब क्या देते खो गए सवालों में

सब खिले हैं किसी के आरिज़ पर
इस बरस बाग़ में गुलाब कहाँ

हँस पड़ी शाम की उदास फ़िज़ा
इस तरह चाय की प्याली हँसी

जिस दिन से चला हूँ मेरी मंज़िल पे नज़र है
आँखों ने कभी मील का पत्थर नहीं देखा

मेरे बिस्तर पे सो रहा है कोई
मेरी आँखों में जागता है कोई

बहुत दिनों से मिरे साथ थी मगर कल शाम
मुझे पता चला वो कितनी ख़ूबसूरत है

अब मिले हम तो कई लोग बिछड़ जायेंगे
इंतज़ार और करो अगले जनम तक मेरा

बशीर बद्र के यहाँ जदीद मौज़ुँआत, लफ़्ज़ियात और जदीद ज़िन्दगी के तजुर्बात पर कई अशआर मिलते हैं,

मसलन:

मछलियाँ चल रही हैं पंजों पर
जिनके चेहरे हैं लड़कियों जैसे

चढ़ा के पीठ पे बकरी के बच्चे घूमेंगे
ये दुनिया अब हमें सर्कस का शेर कर देगी

नहीं है मेरे मुकद्दर में रोशनी ना सही
ये खिड़की खोलो ज़रा सुबह की हवा ही लगे

इतनी मिलती है मिरी ग़ज़लों से सूरत तेरी
लोग तुझको मेरा मेहबूब समझते होंगे

इक समंदर के प्यासे किनारे थे हम अपना पैग़ाम लाती थी मौजे-रवाँ
आज दो रेल की पटरियों की तरह साथ चलना है और बोलना तक नहीं

❁

बर्फ़ सी उजली पोशाक पहने हुए पेड़ जैसे दुआओं में मसरूफ़ हैं
वादियाँ पाक मरयम का आँचल हुईं आओ सजदा करें सर झुकाएं कहीं

❁

आँखें आँसू भरी पलकें बोझल घनी जैसे झीलें भी हों नर्म साए भी हों
वो तो कहिये उन्हें कुछ हँसी आ गई बच गए आज हम डूबते डूबते

बशीर बद्र का अपना मुन्फ़रिद और ख़ूबसूरत लेहजा है जो दूर से पहचाना जा सकता है। बशीर बद्र के यहाँ ज़िन्दगी की पूरी तर्जुमानी मिलती है। वो ग़म या ख़ुशी या किसी ख़ास नज़रिये में ख़ुद को क़ैद नहीं करते। उन्होंने कल्पना चावला के वालिदैन के ग़म को मेहसूस किया। कल्पना चावला जो ख़ला में अमरीका से गई और वापस आते हुए स्पेस शटल रास्ते में ही जल कर ख़त्म हो गया। बशीर बद्र ने इस ग़म को मेहसूस किया और लिखा:

कल्पना खो गई है तारों में
अपनी बच्ची को ढूंढ लाऊँ क्या?
आज संडे है कल भी छुट्टी है
आसमानों में घूम आऊँ क्या?

बशीर बद्र की एक मशहूर ग़ज़ल जिसमें हम्दिया और नातिया शेर हैं जिनको पढ़कर ये मालूम होता है कि बशीर बद्र बड़े ख़ुलूस और इंकेसारी से अपना नज़रानए-अक़ीदत अल्लाह और उसके रसूल की ख़िदमत में पेश करते हैं, बशीर बद्र ने सन 2008 में हज भी कर लिया।

ख़ुदा हमको ऐसी ख़ुदाई न दे
कि अपने सिवा कुछ दिखाई न दे
मुझे ऐसी जन्नत नहीं चाहिये
जहाँ से मदीना दिखाई न दे
मैं अश्कों से नामे-मोहम्मद लिखूँ
क़लम छीन ले, रोशनाई न दे
ख़ुदा ऐसे एहसास का नाम है
रहे सामने और दिखाई न दे

इस मुताले से ये अंदाज़ा होता है कि बशीर बद्र जदीद ग़ज़ल के अहम शायर हैं जिनका असर उनके मुआसिरीन क़ुबूल कर रहे हैं। बशीर बद्र के मजमुए जो मुख़तलिफ़ ज़बानों में

शाए हुए। रिसालों ने उन पर नम्बर निकाले, कई एज़ाज़ात और इनामात से उनको नवाज़ा गया। इसके अलावा जिन फ़राइज़ को उनके सुपुर्द किया गया उनको ख़ुश उसलूबी से अंजाम दिया, उसकी तफ़सील आगे दी जा रही है।

- डॉ. राहत बद्र

ग़ज़ल के सच्चे शेर बच्चों की वो मासूमियत हैं जिनमें हज़ारों साल की बुज़ुर्गी मुस्कुराती है और फिर साठ साला तजरुबाकर ज़हन व दिल में फूल जैसे बच्चे कुछ पाने की ज़िद में मचलने लगते हैं। शायद ऐसा ही कोई लम्हा होगा जब सियासी ज़िम्मेदारियों और अज़मतों की शख़्सियत इंदिरा गांधी ने अपनी एक राज़दार सहेली ऋता शुक्ला टेगौर शिखर पथ, रांची-4 को अपने दिल का कोई अहसास इस शेर के बसीले से वाबस्ता किया था।

उजाले अपनी यादों के हमारे साथ रहने दो
न जाने किस गली में ज़िन्दगी की शाम हो जाए

यही वो शेर है जो मशहूर फ़िल्म ऐक्ट्रेस मीना कुमारी ने (अंग्रेज़ी रिसाला) स्टार एण्ड स्टाइल में अपने हाथ से उर्दू में लिखकर छपवाया था और हिंदुस्तान के सद्र ज्ञानी ज़ैल सिंह ने अपनी आख़िरी तक़रीर को इसी पर समाप्त किया था। शायरी यहाँ ये सवाल पूछती है कि ग़ज़ल में ये बूढ़े लोग बारह तेरह साल के क्यों हो जाते हैं जबकि आज की ग़ज़ल अपने बच्चों का तआरूफ़ इस तरह कराती है -

मुख़्तसर बातें करो बेजा वज़ाहत मत करो
ये नई दुनिया है बच्चों में ज़िहानत है बहुत

ग़ज़ल की रेज़ा ख़्याली मिल्टन और फ़िरदौसी की मुसलसल बयानी और कमरे की बेजान आँख कैसे हज़ारों साल की धड़कनों में बदल जाती है।

मैं अपने बच्चों को समझाने के लिए ये कहना चाहता हूँ कि शायरी में ऐसा नहीं होता कि बाप की विरासत बाप के मरने के बाद बेटे की हो जाय। ये विरासत सिर्फ़ उसको ट्रेनिंग देती है। यानि मीर के इंतिक़ाल के बाद मीर का बेटा उनके घर का वाक़ई मालिक है लेकिन ग़ज़ल में तो उसे अपना घर ख़ुद ही बनाना पड़ेगा।

- बशीर बद्र

1955 में मिसरिख (सीतापुर) के तरही मुशायरे की सदारत एक बुज़ुर्ग सूरत तहसीलदार कर रहे थे तीन शायर अपना कलाम पढ़ चुके थे कि चौथे शायर की हैसियत से नौख़ेज़ और नौजवान बशीर बद्र ने अपना शेर पढ़ा...

उजाले अपनी यादों के हमारे साथ रहने दो
न जाने किस गली में ज़िन्दगी की शाम हो जाए

इस पर महफ़िल झूम ही रही थी कि बुज़ुर्ग सदरे मुशायरा ने मुशायरे के ख़त्म होने का एलान कर दिया, उनका कहना था कि इस ज़मीन में इससे बेहतर शेर मुम्किन नहीं।

- ख़ुर्शीद अफ़सर बिसवॉनी

मिस यूनिवर्स की तक़रीबात में सुष्मितासेन से जब पूछा गया कि आप इतना रिज़र्व क्यों रहती हैं तो उन्होंने जवाब में सिर्फ़ यह शेर कहा...

कोई हाथ भी न मिलाएगा जो गले मिलोगे तपाक से
ये नये मिज़ाज का शहर है ज़रा फ़ासले से मिला करो

- दैनिक जागरण 14-02-94

बशीर बद्र के पास एक ऐसी ज़बान है जो, ज़िन्दगी के मुश्किल से मुश्किल हालात को बड़ी सादगी से बयान कर देती है। उनकी शायरी इतनी आम-फ़हम है कि हर दर्जे का इंसान उनको बड़ी आसानी से पढ़कर-सुनकर-दोहराकर, कभी ख़ुद को तो कभी किसी और को तसल्ली से भर देता है।

और तो और

कुछ तो मजबूरियाँ रही होंगी
यूँ कोई बेवफ़ा नहीं होता

जैसे कुछ शेर ऐसे हैं कि जिनकी वजह से कई कम पढ़े-लिखे लोग भी पढ़े-लिखे नज़र आने लगते हैं।

अब इससे ज़्यादा और क्या हो सकता है कि अगर बशीर बद्र के बारे में कुछ कहना हो तो वह बात कहने के लिए भी उन्हीं के लफ़्ज़ों को दोहराना पड़ता है - 'दुआ करो कि ये पौधा सदा हरा ही रहे।'

- राजकुमार केसवानी

मैं पहली बार बशीर साहब से उनके घर पर मिला। मैं जब उनसे मिलने गया तब डॉ. राहत बद्र जी (बशीर साहब की बेगम) ने मुझे बताया कि साहब अभी सो रहे हैं, आप कल दोपहर 2 बजे आकर मिल लीजिएगा। मैं उनसे मिलने के लिए बेचैन था, सो अगले दिन ठीक दोपहर 2 बजे उनसे मिलने के लिए पहुँच गया। बशीर साहब से मिलकर बहुत ख़ुशी हुई। अब तक मैंने उनकी पुस्तकों से ग़ज़लें व शायरी बहुत पढ़ी थी, लेकिन दिल में एक ख़्वाहिश थी कि मैं कभी उनसे रूबरू होऊँ, और ख़ुद उनसे कुछ शेर सुनूँ। ज़िन्दगी ने मुझ पर ये एहसान भी कर दिया, और वो पल सामने था जब मैंने अपने दिल की बात बशीर साहब के सामने रख दी। तब बशीर साहब ने ख़ुश होकर मुझे कुछ शेर सुनाए, वो ये थे...

उजाले अपनी यादों के हमारे साथ रहने दो
न जाने किस गली में ज़िन्दगी की शाम हो जाये

लोग टूट जाते हैं एक घर बनाने में
तुम तरस नहीं खाते बस्तियाँ जलाने में

बशीर साहब जहाँ अपनी ग़ज़लों व शायरी में मोहब्बतों की बातें करते हैं, वहीं असल ज़िन्दगी में भी उनकी ज़ुबाँ मोहब्बत की बोली बोलती है। वो एक अच्छे शायर होने के साथ-साथ बहुत अच्छे इन्सान भी हैं। जब मैं उनसे मिला तो उनकी कुछ बातें मेरे दिल को छू गईं। मैं बशीर साहब का बहुत बड़ा फ़ैन हूँ। उन्होंने मुझे अपनी एक किताब (ऑथेन्टिक ड्रीम्स) भेंट की, उसके लिए मैं उनका बहुत शुक्रगुज़ार हूँ। मेरी एक इच्छा थी कि मैं उनकी ग़ज़लों से अपनी पसंदीदा ग़ज़लें चयनित करके उन्हें प्रकाशित करूँ, इसके लिए मैंने उनसे अनुमति मांगी और उन्होंने मुझे ख़ुशी से अनुमति दे दी। मैं डॉ. बशीर बद्र का अत्यंत आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे चयनित ग़ज़लें प्रकाशित करवाने की अनुमति दी। इस पुस्तक के प्रकाशन की तैयारी में अपने छोटे भाई विपिन, रवि व दोस्त मान, अर्जुन भैया के द्वारा दिए गए सहयोग के लिए मैं उनका भी आभारी हूँ।

- सचिन चौधरी

बशीर बद्र के एज़ाज़ात (सम्मान/प्रतिष्ठा)

1. ‘पद्मश्री’ सन् 1999 ई. हुकूमत हिन्द
2. पोएट ऑफ़ द इयर अवॉर्ड सन् 1989 ई. न्यूयॉर्क, अमेरीका
3. मीर तक़ी मीर कुल हिन्द अवॉर्ड सन् 1997 ई., मध्यप्रदेश उर्दू अकादमी, भोपाल (एम.पी.)
4. उत्तर प्रदेश उर्दू अकादमी अवॉर्ड सन् 1969 ई.
5. “इम्तियाज़-ए-मीर” मीर तक़ी मीर अकादमी, लखनऊ
6. बिहार उर्दू अकादमी, पटना सन् 1986 ई.
7. अमीर ख़ुसरो अवॉर्ड, दिल्ली सन् 2000 ई.
8. अख़तरूल ईमान अवॉर्ड, दिल्ली सन् 2000 ई.
9. चिराग़ हसन हसरत अवॉर्ड, जम्मू कष्मीर सन् 2000 ई.
10. साहित्य अकादमी अवॉर्ड, दिल्ली सन् 1999 ई.
11. जश्ने बशीर बद्र अवॉर्ड दुबई, सन् 2000 ई. (मजलिसे फ़रोग़-ए-उर्दू अदब दुबई, दोहा)
12. डी लिट (D. Lit.) (आनरेरी डिग्री) सी.सी. यूनिवर्सिटी, मेरठ।

फ़राइज़ः (कर्तव्य)

* लेक्चरर अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी अलीगढ़ (इब्तिदाई चंद साल)
* सद्र बोर्ड ऑफ़ स्टडीज़ रिसर्च डिग्री कमेटी, मेरठ
* सद्र शोअबा उर्दू मेरठ कॉलेज, मेरठ
* रूबल मध्य प्रदेश उर्दू अकादमी, भोपाल
* मेम्बर साहित्य अकादमी, हिन्द, दिल्ली
* रुक्न मजलिसे इंतेज़ामिया तरक़्क़ी उर्दू बोर्ड (मर्कज़ी हुकूमत हिंद) दिल्ली
* एक्सपर्ट इनामी कमेटी, हिमाचल प्रदेश अकादमी
* मेम्बर बोर्ड ऑफ़ स्टडीज़, कुरूक्षेत्र यूनिवर्सिटी
* मेम्बर बोर्ड ऑफ़ स्टडीज़ एण्ड एक्ज़ीक्यूटिव कमेटी (गर्वनर नामनी) बरकतउल्ला यूनिवर्सिटी, भोपाल
* चेयरमेन मध्यप्रदेश उर्दू अकादमी, भोपाल सन् 2005 ई. से 2012 तक।

अनुक्रम

चंद नई ग़ज़लें

चुनिंदा शेर

ग़ज़लें

1

कभी तो आसमाँ से चांद उतरे जाम हो जाये
तुम्हारे नाम की इक ख़ूबसूरत शाम हो जाये

हमारा दिल सवेरे का सुनहरा जाम हो जाये
चराग़ों की तरह आँखें जलें जब शाम हो जाये

अजब हालात थे यूँ दिल का सौदा हो गया आख़िर
मोहब्बत की हवेली जिस तरह नीलाम हो जाये

समन्दर के सफ़र में इस तरह आवाज़ दो हमको
हवाएँ तेज़ हों और कश्तियों में शाम हो जाये

मैं ख़ुद भी एहतियातन उस गली से कम गुज़रता हूँ
कोई मासूम क्यों मेरे लिये बदनाम हो जाये

मुझे मालूम है उस का ठिकाना फिर कहाँ होगा
परिंदा आसमाँ छूने में जब नाकाम हो जाये

उजाले अपनी यादों के हमारे साथ रहने दो
न जाने किस गली में ज़िन्दगी की शाम हो जाये

1987

2

यूँ ही बेसबब न फिरा करो, कोई शाम घर भी रहा करो
वो ग़ज़ल की सच्ची किताब है उसे चुपके चुपके पढ़ा करो

कोई हाथ भी न मिलाएगा जो गले मिलोगे तपाक से
ये नये मिज़ाज का शहर है ज़रा फ़ासले से मिला करो

अभी राह में कई मोड़ हैं कोई आयेगा कोई जायेगा
तुम्हें जिसने दिल से भुला दिया उसे भूलने की दुआ करो

मुझे इश्तहार-सी लगती हैं ये मोहब्बतों की कहानियाँ
जो कहा नहीं वो सुना करो जो सुना नहीं वो कहा करो

कभी हुस्ने परदा नशीं[1] भी हो ज़रा आशिक़ाना लिबास में
जो मैं बन सँवर के कहीं चलूँ मिरे साथ तुम भी चला करो

नहीं बेहिजाब[2] वो चाँद सा कि नज़र का कोई असर न हो
उसे इतनी गरमी-ए-शौक़ से बड़ी देर तक न तका करो

ये ख़िज़ाँ की ज़र्द-सी शाल में जो उदास पेड़ के पास है
ये तुम्हारे घर की बहार है इसे आँसुओं से हरा करो

1977

---

1. पर्दादार प्रेमिका
2. बेपर्दा

3

कभी यूँ भी आ मेरी आँख में, के मेरी नज़र को ख़बर न हो
मुझे एक रात नवाज़ दे, मगर उसके बाद सहर न हो

वो बड़ा रहीम-ओ-करीम है, मुझे ये सिफ़त भी अता करे
तुझे भूलने की दुआ करूँ, तो मेरी दुआ में असर न हो

मिरे बाज़ुओं में थकी-थकी, अभी महवे-ख़्वाब[1] है चांदनी
न बुझे ख़राबे की रोशनी, कभी बेचराग़ ये घर न हो

वो फ़िराक़ हो या विसाल हो, तेरी याद महकेगी एक दिन
वो गुलाब बन के खिलेगा क्या, जो चिराग़ बन के जला न हो

कभी धूप दे, कभी बदलियाँ, दिल-ओ-जाँ से दोनों क़ुबूल हैं
मगर उस नगर में न क़ैद कर जहाँ ज़िन्दगी की हवा न हो

कभी दिन की धूप में झूम के कभी शब के फूल को चूम के
यूँ ही साथ साथ चलें सदा कभी ख़त्म अपना सफ़र न हो

मिरे पास मेरे हबीब आ ज़रा और दिल के क़रीब आ
तुझे धड़कनों में बसा लूँ मैं के बिछड़ने का कोई डर न हो

1978

1. निंद्रालीन

4

वो नहीं मिला तो मलाल क्या, जो गुज़र गया सो गुज़र गया
उसे याद कर के न दिल दुखा, जो गुज़र गया सो गुज़र गया

न गिला किया, न ख़फ़ा हुए, यूँ ही रास्ते में जुदा हुए
न तू बेवफ़ा, न मैं बेवफ़ा, जो गुज़र गया सो गुज़र गया

वो ग़ज़ल कि कोई किताब था, वो गुलों में एक गुलाब था
ज़रा देर का कोई ख़्वाब था, जो गुज़र गया सो गुज़र गया

मुझे पतझड़ों की कहानियाँ न सुना सुना के उदास कर
तू ख़िज़ाँ का फूल है मुस्करा, जो गुज़र गया सो गुज़र गया

वो उदास धूप समेट कर कहीं वादियों में उतर चुका
उसे अब न दे मिरे दिल सदा, जो गुज़र गया सो गुज़र गया

ये सफ़र भी कितना तवील[1] है, यहाँ वक़्त कितना क़लील[2] है
कहाँ लौट कर कोई आएगा, जो गुज़र गया सो गुज़र गया

कोई फ़र्क़े शाहो-गदा[3] नहीं कि यहाँ किसी को बक़ा[4] नहीं
ये उजाड़ महलों की सुन सदा, जो गुज़र गया सो

गुज़र गया

तुझे ऐतबारो-यक़ीं नहीं, नहीं दुनिया इतनी बुरी नहीं
न मलाल कर मिरे साथ आ, जो गुज़र गया सो गुज़र गया

1989

---

1. लम्बा
2. छोटा
3. फ़क़ीर
4. अमरत्व

5

ना जी भर के देखा, ना कुछ बात की
बड़ी आरज़ू थी मुलाक़ात की

कई साल से कुछ ख़बर ही नहीं
कहाँ दिन गुज़ारा, कहाँ रात की

उजालों की परियाँ नहाने लगीं
नदी गुनगुनाई, ख़यालात की

मैं चुप था तो चलती हवा रुक गई
ज़ुबाँ सब समझते हैं जज़्बात की

सितारों को शायद ख़बर ही नहीं
मुसाफ़िर ने जाने कहाँ रात की

मुकद्दर मेरे चश्मे-पुरआब[1] का
बरसती हुई रात बरसात की

1959

1. आँसू भरी आँखें

6

आँखों में रहा दिल में उतर कर नहीं देखा
कश्ती के मुसाफ़िर ने समन्दर नहीं देखा

बेवक़्त अगर जाऊँगा, सब चौंक पड़ेंगे
इक उम्र हुई दिन में कभी घर नहीं देखा

जिस दिन से चला हूँ मिरी मंज़िल पे नज़र है
आँखों ने कभी मील का पत्थर नहीं देखा

ये फूल मुझे कोई विरासत में मिले हैं
तुमने मेरा काँटों-भरा बिस्तर नहीं देखा

पत्थर मुझे कहता है मिरा चाहने वाला
मैं मोम हूँ उसने मुझे छूकर नहीं देखा

क़ातिल के तरफ़दार का कहना है कि उसने
मक़तूल की गर्दन पे कभी सर नहीं देखा

1978

7

मोहब्बतों में दिखावे की दोस्ती न मिला
अगर गले नहीं मिलता, तो हाथ भी न मिला

घरों पे नाम थे, नामों के साथ ओहदे थे
बहुत तलाश किया, कोई आदमी न मिला

तमाम रिश्तों को मैं, घर पे छोड़ आया था
फिर इसके बाद मुझे कोई अजनबी न मिला

बहुत अजीब है ये क़ुर्बतों[1] की दूरी भी
वो मेरे साथ रहा और मुझे कभी न मिला

ख़ुदा की इतनी बड़ी कायनात में मैंने
बस एक शख़्स को माँगा, मुझे वही न मिला

1986

---

1. नज़दीकी

8

वो चांदनी का बदन ख़ुशबुओं का साया है
बहुत अज़ीज़ हमें है मगर पराया है

उतर भी आओ कभी आसमाँ के ज़ीने से
तुम्हें ख़ुदा ने हमारे लिये बनाया है

महक रही है ज़मीं चांदनी के फूलों से
ख़ुदा किसी की मोहब्बत पे मुस्कराया है

उसे किसी की मोहब्बत का ऐतबार नहीं
उसे ज़माने ने शायद बहुत सताया है

तमाम उम्र मिरा दम इसी धुएँ में घुटा
वो इक चराग़ था मैंने उसे बुझाया है

1975

9

ख़ुश रहे या बहुत उदास रहे
ज़िन्दगी तेरे आस-पास रहे

चांद इन बदलियों से निकलेगा
कोई आयेगा दिल को आस रहे

हम मुहब्बत के फूल हैं शायद
कोई काँटा भी आस पास रहे

मेरे सीने में इस तरह बस जा
मेरी सांसों में तेरी बास रहे

आज हम सब के साथ ख़ूब हँसे
और फिर देर तक उदास रहे

दोनों इक दूसरे का मुँह देखें
आईना आईने के पास रहे

जब भी कसने लगा उतार दिया
इस बदन पर कई लिबास रहे

1970

10

मुझसे बिछड़ के ख़ुश रहते हो
मेरी तरह तुम भी झूटे हो

इक टहनी पर चांद टिका था
मैं ये समझा तुम बैठे हो

उजले-उजले फूल खिले थे
बिल्कुल जैसे तुम हँसते हो

मुझको शाम बता देती है
तुम कैसे कपड़े पहने हो

तुम तन्हा दुनिया से लड़ोगे
बच्चों-सी बातें करते हो

1983

11

सुन ली जो ख़ुदा ने वो दुआ तुम तो नहीं हो
दरवाज़े पे दस्तक की सदा तुम तो नहीं हो

सिमटी हुई शरमाई हुई रात की रानी
सोई हुई कलियों की हया तुम तो नहीं हो

महसूस किया तुम को तो गीली हुईं पलकें
भीगे हुये मौसम की अदा तुम तो नहीं हो

इन अजनबी राहों में नहीं कोई भी मेरा
किस ने मुझे यूँ अपना कहा तुम तो नहीं हो

दुनिया को बहरहाल गिले शिकवे रहेंगे
दुनिया की तरह मुझ से ख़फ़ा तुम तो नहीं हो

1986

12

कौन आया रास्ते, आईना-ख़ाने हो गये
रात रौशन हो गई है, दिन भी सुहाने हो गये

क्यों हवेली के उजड़ने का मुझे अफ़सोस हो
सैकड़ों बेघर परिन्दों के ठिकाने हो गये

ये भी मुमकिन है के मैंने उसको पहचाना न हो
अब उसे देखे हुए, कितने ज़माने हो गये

जाओ उन कमरों के आईने उठाकर फेंक दो
बेअदब ये कह रहे हैं, हम पुराने हो गये

मेरी पलकों पर ये आँसू, प्यार की तौहीन थे
उसकी आँखों से गिरे, मोती के दाने हो गये

1984

13

जो कहूँगा सच कहूँगा, यही फ़ैसला किया है
जो लिखूँगा सच लिखूँगा, यही फ़ैसला किया है

बड़ा दिल-फ़रेब[1] होगा यहाँ पतझड़ों का मौसम
किसी शाख़ पर खिलूँगा, यही फ़ैसला किया है

तू बहुत दहक रहा है, तू बहुत चमक रहा है
तिरे होंठ चूम लूँगा, यही फ़ैसला किया है

वो हवा ज़रूर आए, मिरी रात साथ लाए
मैं चराग़ हूँ जलूँगा, यही फ़ैसला किया है

सरे-शाम तेरे आँसू जो ज़रा छलक पडेंगे
उन्हें रात भर चुनूँगा, यही फ़ैसला किया है

जो बहुत क़दीम[2] होगा, जो बहुत ज़दीद[3] होगा
उसे सबसे छीन लूँगा, यही फ़ैसला किया है

तिरी दोस्ती के सदक़े, तिरी दुश्मनी के क़ुरबाँ
मैं यहीं जिऊँ-मरूँगा, यही फ़ैसला किया है

1. मन को मोह लेने वाला
2. पुराना
3. आधुनिक

14

राहों में कौन आ गया कुछ पता नहीं
उसको तलाश करते रहे जो मिला नहीं

बेआस खिड़कियाँ हैं, सितारे उदास हैं
आँखों में आज नींद का कोसों पता नहीं

मैं चुप रहा तो और ग़लतफ़हमियाँ बढ़ीं
वो भी सुना है उसने जो मैंने कहा नहीं

दिल में उसी तरह है बचपन की एक याद
शायद अभी कली को हवा ने छुआ नहीं

चेहरे पे आँसुओं ने लिखी हैं कहानियाँ
आईना देखने का मुझे हौसला नहीं

1980

15

सूरज-चंदा जैसी जोड़ी हम दोनों
दिन का राजा रात की रानी हम दोनों

जगमग जगमग दुनिया का मेला झूटा
सच्चा सोना सच्ची चांदी हम दोनों

इक दूजे से मिल कर पूरे होते हैं
आधी आधी एक कहानी हम दोनों

घर-घर दुःख-सुख का इक दीपक जले बुझे
हर दीपक में तेल और बाती हम दोनों

दुनिया की ये माया कंकर पत्थर है
आँसू, शबनम, हीरा, मोती हम दोनों

चारों ओर समुन्दर बढ़ती चिन्ताएँ
लहर लहर लहराती कश्ती हम दोनों

परबत परबत बादल बादल किरन किरन
उजले पर वाले दो पंछी हम दोनों

मैं दहलीज़ का दीपक हूँ आ तेज़ हवा
रात गुज़ारें अपनी अपनी हम दोनों

1976

16

सर झुकाओगे तो पत्थर, देवता हो जाएगा
इतना मत चाहो उसे, वो बेवफ़ा हो जायेगा

हम भी दरिया हैं, हमें अपना हुनर मालूम है
जिस तरफ़ भी चल पड़ेंगे, रास्ता हो जायेगा

कितनी सच्चाई से, मुझसे ज़िन्दगी ने कह दिया
तू नहीं मेरा तो कोई, दूसरा हो जायेगा

मैं ख़ुदा का नाम लेकर, पी रहा हूँ दोस्तो
ज़हर भी इसमें अगर होगा, दवा हो जायेगा

सब उसी के हैं हवा, ख़ुशबू, ज़मीनो-आसमाँ
मैं जहाँ भी जाऊँगा, उसको पता हो जायेगा

1988

17

ख़ुदा हम को ऐसी ख़ुदाई न दे
कि अपने सिवा कुछ दिखाई न दे

ख़तावार समझेगी दुनिया तुझे
अब इतनी भी ज़्यादा सफ़ाई न दे

हँसो आज इतना कि इस शोर में
सदा सिसकियों की सुनाई न दे

मुझे अपनी चादर से यूँ ढाँप लो
ज़मीं आसमाँ कुछ दिखाई न दे

ग़ुलामी को बरकत समझने लगें
असीरों को ऐसी रिहाई न दे

मुझे ऐसी जन्नत नहीं चाहिए
जहाँ से मदीना दिखाई न दे

मैं अश्कों से नामे मोहम्मद लिखूँ
क़लम छीन ले, रोशनाई न दे

ख़ुदा ऐसे अहसास का नाम है
रहे सामने और दिखाई न दे

1977

18

मेरे साथ तुम भी दुआ करो, यूँ किसी के हक़ में बुरा न हो
कहीं और हो न ये हादसा, कोई रास्ते में जुदा न हो

मेरे घर से रात की सेज तक, वो इक आँसू की लकीर है
ज़रा बढ़ के चाँद से पूछना, वो इसी तरफ़ से गया न हो

सरे-शाम ठहरी हुई ज़मीं, जहाँ आसमाँ है झुका हुआ
इसी मोड़ पर मेरे वास्ते, वो चराग़ ले के खड़ा न हो

वो फ़रिश्ते आप ही ढूँढिये, कहानियों की किताब में
जो बुरा कहें न बुरा सुनें, कोई शख़्स उन से ख़फ़ा न हो

वो विसाल हो के फ़िराक़ हो, तेरी आग महकेगी एक दिन
वो गुलाब बन के खिलेगा क्या? जो चराग़ बन के जला न हो

मुझे यूँ लगा कि ख़ामोश ख़ुशबू के होंठ तितली ने छू लिये
इन्हीं ज़र्द पत्तों की ओट में, कोई फूल सोया हुआ न हो

इसी एहतियात में मैं रहा, इसी एहतियात में वो रहा
वो कहाँ कहाँ मेरे साथ है, किसी और को ये पता न हो

1985

19

लोग टूट जाते हैं एक घर बनाने में
तुम तरस नहीं खाते, बस्तियाँ जलाने में

और जाम टूटेंगे, इस शराबख़ाने में
मौसमों के आने में मौसमों के जाने में

हर धड़कते पत्थर को लोग दिल समझते हैं
उम्र बीत जाती है, दिल को दिल बनाने में

फ़ाख़्ता की मजबूरी ये भी कह नहीं सकती
कौन साँप रखता है, उसके आशियाने में

दूसरी कोई लड़की, ज़िन्दगी में आएगी
कितनी देर लगती है, उसको भूल जाने में

20

पास से देखो जुगनू आँसू, दूर से देखो तारा आँसू
मैं फूलों की सेज पे बैठा आधी रात का तन्हा आँसू

मेरी इन आँखों ने अकसर ग़म के दोनों पहलू देखे
ठहर गया तो पत्थर आँसू, बह निकला तो दरिया आँसू

प्यार अजब तलवार है जिस पर हम दोनों के नाम लिखे हैं
मेरी आँख में तेरा आँसू, तेरी आँख में मेरा आँसू

अपने बचपन का क़िस्सा है, इक तस्वीर बनाई उसने
मेहंदी वाले हाथ रचे हैं, बीच हथेली टपका आँसू

मौसम की ख़ुशबू में अकसर ग़म की ख़ुशबू मिल जाती है
आमों के बाग़ों में कैसे सावन-सावन बरसा आँसू

1976

21

बरस भी जाओ कभी बारिशों की रहमत हो
हज़ार दूर रहो तुम मिरी मोहब्बत हो

ज़रा हँसो कि यही धूप फूल बरसाए
तुम्हें ख़बर नहीं तुम कितनी ख़ूबसूरत हो

मैं तुमको ढूँढ रहा हूँ हज़ार जनमों से
मिलो, मिलो न मिलो तुम मिरी अमानत हो

उसे बुलाओ जहाँ बारिशों का नाम न हो
उसे बुलाओ जहाँ बारिशों की शिद्दत[1] हो

सफ़र सफ़र है, हमेशा सफ़र में याद रहे
तुम ऐतबार किसी का, किसी की इज़्ज़त हो

---

1. तीव्रता, आधिक्य

22

हमारा दिल सवेरे का सुनहरा जाम हो जाये
चराग़ों की तरह आँखें जलें जब शाम हो जाये

मैं ख़ुद भी एहतियातन उस गली से कम गुज़रता हूँ
कोई मासूम क्यों मेरे लिए बदनाम हो जाये

अजब हालात थे यूँ दिल का सौदा हो गया आख़िर
मोहब्बत की हवेली जिस तरह नीलाम हो जाये

समन्दर के सफ़र में इस तरह आवाज़ दो हमको
हवाएँ तेज़ हों और कश्तियों में शाम हो जाये

मुझे मालूम है उसका ठिकाना फिर कहाँ होगा
परिन्दा आसमाँ छूने में जब नाकाम हो जाये

उजाले अपनी यादों के हमारे साथ रहने दो
न जाने किस गली में ज़िन्दगी की शाम हो जाये

1956

23

वो ग़ज़ल वालों का असलूब[1] समझते होंगे
चांद कहते हैं किसे ख़ूब समझते होंगे

इतनी मिलती है मिरी ग़ज़लों से सूरत तेरी
लोग तुझ को मिरा महबूब समझते होंगे

मैं समझता था मोहब्बत की ज़बाँ ख़ुशबू है
फूल से लोग उसे ख़ूब समझते हांगे

देख कर फूल के अवराक़[2] पे शबनम कुछ लोग
तेरा अश्कों भरा मकतूब[3] समझते होंगे

भूल कर अपना ज़माना ये ज़माने वाले
आज के प्यार को मायूब[4] समझते होंगे

1976

1. शैली
2. पन्ने
3. ख़त
4. बुरा, ऐबदार

24

चल मुसाफ़िर, बत्तियाँ जलने लगीं
आसमानी घंटियाँ बजने लगीं

दिन के सारे कपड़े ढीले हो गए
रात की सब चोलियाँ कसने लगीं

डूब जायेंगे सभी दरया, पहाड़
चांदनी की नदियाँ चढ़ने लगीं

जामुनों के बाग़ पर छाई घटा
ऊदी-ऊदी[1] लड़कियाँ हँसने लगीं

रात की तन्हाइयों को सोचकर
चाय की दो प्यालियाँ हँसने लगीं

दौड़ते हैं फूल बस्तों को दबाए
पाँवो-पाँवो तितलियाँ चलने लगीं

बन्द कर लो दर, दरीचे, खिड़कियाँ
फिर हवा में सीटियाँ बजने लगीं

रात इक तालाब के आईने में
झिलमिलाती कश्तियाँ चलने लगीं

1971

---

1. जामुनी

25

परखना मत, परखने में कोई अपना नहीं रहता
किसी भी आईने में देर तक चेहरा नहीं रहता

बड़े लोगों से मिलने में हमेशा फ़ासला रखना
जहाँ दरया समन्दर से मिला, दरया नहीं रहता

हज़ारों शेर मेरे सो गये काग़ज़ की क़ब्रों में
अजब माँ हूँ कोई बच्चा मिरा ज़िन्दा नहीं रहता

तुम्हारा शहर तो बिल्कुल नये अन्दाज़ वाला है
हमारे शहर में भी अब कोई हम सा नहीं रहता

मोहब्बत एक ख़ुशबू है, हमेशा साथ चलती है
कोई इन्सान तन्हाई में भी तन्हा नहीं रहता

कोई बादल हरे मौसम का फिर ऐलान करता है
ख़िज़ाँ के बाग़ में जब एक भी पत्ता नहीं रहता

1996

26

जहाँ पेड़ पर चार दाने लगे
हज़ारों तरफ़ से निशाने लगे

हुई शाम, यादों के इक गाँव से
परिन्दे उदासी के आने लगे

घड़ी-दो घड़ी मुझको पलकों पे रख
यहाँ आते-आते ज़माने लगे

कभी बस्तियाँ दिल की यूँ भी बसीं
दुकानें खुलीं, कारख़ाने लगे

वहीं ज़र्द पत्तों का क़ालीन है
गुलों के जहाँ शामियाने लगे

पढ़ाई-लिखाई का मौसम कहाँ
किताबों में ख़त आने-जाने लगे

1984

27

चमक रही है परों में, उड़ान की ख़ुशबू
बुला रही है बहुत आसमान की ख़ुशबू

भटक रही है पुरानी दुलाइयाँ ओढ़े
हवेलियों में मेरे ख़ानदान की ख़ुशबू

सुनाके कोई कहानी हमें सुलाती थी
दुआओं जैसी बड़े पानदान की ख़ुशबू

दबा था कोई फूल मेज़पोश के नीचे
गरज रही थी बहुत पेचवान की ख़ुशबू

अजब वक़ार था, सूखे सुनहरे बालों में
उदासियों की चमक, ज़र्द लान की ख़ुशबू

वो इत्रदान-सा लहजा मेरे बुज़ुर्गों का
रची-बसी हुई उर्दू ज़बान की ख़ुशबू

ख़ुदा का शुक्र है मेरे जवान बेटे के
बदन से आने लगी ज़ाफ़रान की ख़ुशबू

इमारतों की बुलंदी पे कोई मौसम क्या
कहाँ से आ गई कच्चे मकान की ख़ुशबू

गुलों पे लिखती हुई, ला इलाहा इल लल्लाह
पहाड़ियों से उतरती, अज़ान की ख़ुशबू

28

पत्थर के जिगर वालो ग़म में वो रवानी है
ख़ुद राह बना लेगा बहता हुआ पानी है

फूलों में ग़ज़ल रखना ये रात की रानी है
उस में तेरी ज़ुल्फ़ों की बे रब्त[1] कहानी है

इक ज़हने-परेशाँ में वो फूल सा चेहरा है
पत्थर की हिफ़ाज़त में शीशे की जवानी है

क्यों चांदनी रातों में दरया पे नहाते हो
सोये हुए पानी में क्या आग लगानी है

इस हौसलये-दिल पर हम ने भी कफ़न पहना
हँस कर कोई पूछेगा क्या जान गँवानी है

रोने का असर दिल पर रह रह के बदलता है
आँसू कभी शीशा है, आँसू कभी पानी है

ये शबनमी लहजा है आहिस्ता ग़ज़ल पढ़ना
तितली की कहानी है फूलों की ज़ुबानी है

1959

---

1. बेतरतीब

29

होंठों पे मोहब्बत के फ़साने नहीं आते
साहिल पे समन्दर के ख़ज़ाने नहीं आते

पलकें भी चमक उठती हैं सोते में हमारी
आँखों को अभी ख़्वाब छुपाने नहीं आते

दिल उजड़ी हुई इक सराय की तरह है
अब लोग यहाँ रात बिताने नहीं आते

उड़ने दो परिन्दों को अभी शोख़ हवा में
फिर लौट के बचपन के ज़माने नहीं आते

इस शहर के बादल तेरी ज़ुल्फ़ों की तरह हैं
ये आग लगाते हैं बुझाने नहीं आते

क्या सोचकर आए हो मोहब्बत की गली में
जब नाज़ हसीनों के उठाने नहीं आते

अहबाब[1] भी ग़ैरों की अदा सीख गये हैं
आते हैं मगर दिल को दुखाने नहीं आते

1980

1. दोस्त

30

हँसी मासूम-सी बच्चों की कॉपी में इबारत-सी
हिरन की पीठ पर बैठे परिन्दे की शरारत-सी

वो जैसे सर्दियों में गर्म कपड़े दें फ़क़ीरों को
लबों पे मुस्कुराहट थी मगर कैसी हिक़ारत-सी

उदासी पतझड़ों की शाम ओढ़े रास्ता तकती
पहाड़ी पर हज़ारों साल की कोई इमारत-सी

सजाये बाज़ुओं पर बाज़ वो मैदाँ में तन्हा था
चमकती थी ये बस्ती धूप में ताराज-ओ-ग़ारत[1]-सी

मेरी आँखों, मेरे होठों पे ये कैसी तमाज़त[2] है
कबूतर के परों की रेशमी उजली हरारत-सी

खिला दे फूल मेरे बाग़ में पैग़म्बरों जैसा
लिखी हो जिसकी पेशानी पे इक आयत बशारत-सी

1980

1. तबाह और लुटी हुई
2. गर्मी

31

ये कसक दिल की दिल में चुभी रह गई
ज़िन्दगी में तुम्हारी कमी रह गई

एक मैं, एक तुम, एक दीवार थी
ज़िन्दगी आधी-आधी बँटी रह गई

रात की भीगी-भीगी छतों की तरह
मेरी पलकों पे थोड़ी नमी रह गई

मैंने रोका नहीं वो चला भी गया
बेबसी दूर तक देखती रह गई

मेरे घर की तरफ़ धूप की पीठ थी
आते-आते इधर चांदनी रह गई

1980

32

माटी की कच्ची गागर को क्या खोना, क्या पाना बाबा
माटी को माटी है रहना, माटी में मिल जाना बाबा

हम क्या जानें दीवारों से, कैसे धूप उतरती होगी
रात रहे बाहर जाना है, रात गए घर आना बाबा

जिस लकड़ी को अन्दर-अन्दर, दीमक बिल्कुल चाट चुकी हो
उसको ऊपर से चमकाना, राख पे धूप जमाना बाबा

प्यार की गहरी फुन्कारों से, सारा बदन आकाश हुआ है
दूध पिलाना, तन डसवाना, है दस्तूर पुराना बाबा

इन ऊँचे शहरों में पैदल, सिर्फ़ दिहाती ही चलते हैं
हमको बाज़ारों से इक दिन, काँधे पर ले जाना बाबा

1971

33

मैं ज़मीं ता आसमाँ, वो क़ैद आतिशदान में
धूप रिश्ता बन गई, सूरज में और इन्सान में

मैं बहुत दिन तक सुनहरी धूप का आँगन रहा
एक दिन फिर यूँ हुआ शाम आ गई दालान में

किस के अन्दर क्या छुपा है कुछ पता चलता नहीं
तेल की दौलत मिली वीरान रेगिस्तान में

शक्ल, सूरत, नाम, पहनावा, ज़ुबाँ अपनी जगह
फ़र्क़ वरना कुछ नहीं इन्सान और इन्सान में

इन नई नस्लों ने सूरज आज तक देखा नहीं
रात हिन्दुस्तान में है, रात पाकिस्तान में

1998

34

कोई फूल धूप की पत्तियों में, हरे रिबन से बँधा हुआ
वो ग़ज़ल का लहजा नया-नया, न कहा हुआ न सुना हुआ

जिसे ले गई है अभी हवा, वो वरक़ था दिल की किताब का
कहीं आँसुओं से मिटा हुआ, कहीं आँसुओं से लिखा हुआ

कई मील रेत को काटकर, कोई मौज फूल खिला गई
कोई पेड़ प्यास से मर रहा है, नदी के पास खड़ा हुआ

मुझे हादसों ने सजा-सजा के बहुत हसीन बना दिया
मिरा दिल भी जैसे दुल्हन का हाथ हो, मेहँदियों से रचा हुआ

वही शहर है वही रास्ते, वही घर है और वही लान भी
मगर इस दरीचे से पूछना, वो दरख़्त अनार का क्या हुआ

वही ख़त के जिस पे जगह-जगह, दो महकते होंठों के चाँद थे
किसी भूले-बिसरे से ताक़ पर, तहे-गर्द होगा दबा हुआ

1975

35

कभी यूँ मिलें कोई मसलेहत, कोई ख़ौफ़ दिल में ज़रा न हो
मुझे अपनी कोई ख़बर न हो, तुझे अपना कोई पता न हो

वो फ़िराक़ हो या विसाल हो, तेरी याद महकेगी एक दिन
वो गुलाब बन के खिलेगा क्या, जो चराग़ बन के जला न हो

कभी धूप दे, कभी बदलियाँ, दिलो-जाँ से दोनों-क़ुबूल हैं
मगर उस नगर में न क़ैद कर, जहाँ ज़िन्दगी की हवा न हो

वो हज़ारों बाग़ों का बाग़ हो, तेरी बरकतों की बहार से
जहाँ कोई शाख़ हरी न हो, जहाँ कोई फूल खिला न हो

तेरे इख़्तियार में क्या नहीं, मुझे इस तरह से नवाज़ दे
यूँ दुआएँ मेरी क़ुबूल हों, मेरे दिल में कोई दुआ न हो

कभी हम भी जिस के क़रीब थे, दिलो-जाँ से बढ़के अज़ीज़ थे
मगर आज ऐसे मिला है वो, कभी पहले जैसे मिला न हो

1980

36

किसे ख़बर थी तुझे इस तरह सजाऊँगा
ज़माना देखेगा, और मैं न देख पाऊँगा

हयातो-मौत, फ़िराक़ो-विसाल सब यकजा
मैं एक रात में कितने दिये जलाऊँगा

पला, बढ़ा हूँ अभी तक इन्हीं अँधेरों में
मैं तेज़ धूप से कैसे नज़र मिलाऊँगा

मेरे मिज़ाज की ये मादराना फ़ितरत है
सवेरे सारी अज़ीयत[1], मैं भूल जाऊँगा

तुम एक पेड़ से वाबस्ता हो मगर मैं तो
हवा के साथ बहुत दूर-दूर जाऊँगा

मिरा ये अहद है मैं, आज शाम होने तक
जहाँ से रिज़्क़ लिखा है, वहीं से लाऊँगा

1970

---

1. तकलीफ़

37

कहाँ आँसुओं की ये, सौग़ात होगी
नये लोग होंगे, नयी बात होगी

मैं हर हाल में मुस्कुराता रहूँगा
तुम्हारी मोहब्बत अगर साथ होगी

चराग़ों को आँखों में महफ़ूज़ रखना
बड़ी दूर तक रात ही रात होगी

न तुम होश में हो, न हम होश में हैं
चलो मयक़दे में वहीं बात होगी

जहाँ वादियों में नये फूल आयें
हमारी-तुम्हारी मुलाक़ात होगी

सदाओं को अल्फ़ाज़, मिलने न पायें
न बादल घिरेंगे, न बरसात होगी

मुसाफ़िर हैं हम भी मुसाफ़िर हो तुम भी
किसी मोड़ पर फिर मुलाक़ात होगी

1973

38

कोई हाथ नहीं ख़ाली है
बाबा, ये नगरी कैसी है

कोई किसी का दर्द न जाने
सबको अपनी-अपनी पड़ी है

उसका भी कुछ हक़ है आख़िर
उसने मुझसे नफ़रत की है

जैसे सदियाँ बीत चुकी हों
फिर भी आधी रात अभी है

कैसे कटेगी, तन्हा-तन्हा
इतनी सारी उम्र पड़ी है

हम दोनों की ख़ूब निभेगी
मैं भी दुखी हूँ, वो भी दुखी है

अब ग़म से क्या नाता तोड़ें
ज़ालिम बचपन का साथी है

1960

39

अगर तलाश करूँ कोई मिल ही जायेगा
मगर तुम्हारी तरह कौन मुझे चाहेगा

तुम्हें ज़रूर कोई चाहतों से देखेगा
मगर वो आँखें हमारी कहाँ से लायेगा

न जाने कब तेरे दिल पर नई सी दस्तक हो
मकान ख़ाली हुआ है तो कोई आयेगा

मैं अपनी राह में दीवार बन के बैठा हूँ
अगर वो आया तो किस रास्ते से आयेगा

तुम्हारे साथ ये मौसम फ़रिश्तों जैसा है
तुम्हारे बाद ये मौसम बहुत सतायेगा

1986

40

अब तेरे-मेरे बीच कोई फ़ासला भी हो
हम लोग जब मिलें, तो कोई दूसरा भी हो

तू जानता नहीं, मेरी चाहत अजीब है
मुझको मना रहा है, कभी ख़ुद ख़फ़ा भी हो

तू बेवफ़ा नहीं है मगर बेवफ़ाई कर
उसकी नज़र में रहने का कुछ सिलसिला भी हो

पतझड़ के टूटते हुए पत्तों के साथ-साथ
मौसम कभी तो बदलेगा, ये आसरा भी हो

चुपचाप उसको बैठ के देखूँ तमाम रात
जागा हुआ भी हो, कोई सोया हुआ भी हो

उसके लिए तो मैंने, यहाँ तक दुआएँ कीं
मेरी तरह से कोई उसे चाहता भी हो

इतनी सियाह रात में किसको सदाएँ दूँ
ऐसा चिराग़ दे जो कभी बोलता भी हो

1987

41

घर से निकले अगर हम बहक जाएंगे
वो गुलाबी कटोरे छलक जाएंगे

हमने अल्फ़ाज़[1] को आईना कर दिया
छिपने वाले ग़ज़ल में चमक जाएंगे

दुश्मनी का सफ़र इक क़दम, दो क़दम
तुम भी थक जाओगे, हम भी थक जाएंगे

रफ़्ता-रफ़्ता[2] हर एक ज़ख़्म भर जाएगा
सब निशानात[3] फूलों से ढक जाएंगे

नाम पानी पे लिखने से क्या फ़ायदा
लिखते-लिखते तेरे हाथ थक जाएंगे

दिन में परियों की कोई कहानी न सुन
जंगलों में मुसाफ़िर भटक जाएंगे

1982

---

1. शब्द
2. धीरे-धीरे
3. चिन्ह

42

ग़ज़लों का हुनर अपनी आँखों को सिखायेंगे
रोयेंगे बहुत लेकिन, आँसू नहीं आयेंगे

कह देना समन्दर से, हम ओस के मोती हैं
दरिया की तरह तुझसे मिलने नहीं आयेंगे

वो धूप के छप्पर हों या छाँव की दीवारें
अब जो भी उठायेंगे, मिलजुल के उठायेंगे

जब साथ न दे कोई, आवाज़ हमें देना
हम फूल सही लेकिन पत्थर भी उठायेंगे

1988

43

अब है टूटा-सा दिल, ख़ुद से बेज़ार-सा
इस हवेली में लगता था दरबार-सा

इस तरह साथ निभना है दुश्वार-सा
मैं भी तलवार-सा, तू भी तलवार-सा

ख़ूबसूरत-सी पाँवों में ज़ंजीर हो
घर में बैठा रहूँ मैं गिरफ़्तार-सा

शाम तक कितने हाथों से गुज़रूँगा मैं
चायख़ानों में उर्दू के अख़बार-सा

मैं फ़रिश्तों की सोहबत के लायक़ नहीं
हमसफ़र कोई होता गुनहगार-सा

बात क्या है के मशहूर लोगों के घर
मौत का सोग होता है, त्योहार-सा

ज़ीना-ज़ीना उतरता हुआ आईना
उसका लहजा अनोखा खनकदार-सा

44

सरे-राह कुछ भी कहा नहीं, कभी उसके घर में गया नहीं
मैं जनम-जनम से उसी का हूँ उसे आज तक ये पता नहीं

उसे पाक नज़रों से चूमना भी इबादतों में शुमार है
कोई फूल लाख क़रीब हो, कभी मैंने उसको छुआ नहीं

ये ख़ुदा की देन अजीब है, कि इसी का नाम नसीब है
जिसे तूने चाहा वो मिल गया, जिसे मैंने चाहा मिला नहीं

इसी शहर में कई साल से मेरे कुछ क़रीबी अज़ीज़ हैं
उन्हें मेरी कोई ख़बर नहीं, मुझे उनका कोई पता नहीं

1976

45

आग को गुलज़ार कर दे, बर्फ़ को दरिया करे
देखने वाला तेरी आवाज़ को देखा करे

उसकी रहमत ने मिरे बच्चे के माथे पर लिखा
इस परिन्दे के परों पर आसमाँ सजदा करे

एक मुट्ठी ख़ाक थे हम, एक मुट्ठी ख़ाक हैं
उसकी मर्ज़ी है हमें सहरा करे, दरिया करे

दिन का शहज़ादा मिरा मेहमान है, बेशक रहे
रात का भूला मुसाफ़िर भी यहाँ ठहरा करे

आज पाकिस्तान की इक शाम याद आई बहुत
क्या ज़रूरी है कि बेटी, बाप से परदा करे

1998

46

सियाहियों के बने हर्फ़-हर्फ़[1] धोते हैं
ये लोग रात में काग़ज़ कहाँ भिगोते हैं

किसी की राह में दहलीज़ पर दिये न रखो
किवाड़ सूखी हुई लकड़ियों के होते हैं

चराग़ पानी में मौजों से पूछते होंगे
वो कौन लोग हैं जो कश्तियाँ डुबोते हैं

उन्हीं में खेलने आती हैं बेरिया[2] रूहें
वो घर जो लाल, हरी दफ़्तियों के होते हैं

क़दीम[3] क़स्बों में कैसा सुकून होता है
थके थकाये हमारे बुज़ुर्ग सोते हैं

चमकती है कहीं सदियों में आँसुओं से ज़मीं
ग़ज़ल के शेर कहाँ रोज़-रोज़ होते हैं

1978

---

1. अक्षर
2. निष्कपट, निश्छल
3. पुराने

47

अपनी उदास धूप तो घर-घर चली गई
ये रोशनी लकीर के बाहर चली गई

नीला-सफ़ेद कोट ज़मीं पर बिछा दिया
फिर मुझको आसमान पे लेकर चली गई

कब तक झुलसती रेत पे चलती तुम्हारे साथ
दरिया की मौज, दरिया के अन्दर चली गई

हम लोग ऊँचे पोल के नीचे खड़े रहे
उल्टा था बल्ब रोशनी ऊपर चली गई

लहरों ने घेर रक्खा था, सारे मकान को
मछली किधर से कमरे के अन्दर चली गई

1971

48

सोचा नहीं अच्छा-बुरा, देखा-सुना कुछ भी नहीं
माँगा ख़ुदा से रात-दिन, तेरे सिवा कुछ भी नहीं

देखा तुझे, सोचा तुझे, चाहा तुझे, पूजा तुझे
मेरी ख़ता मेरी वफ़ा, तेरी ख़ता कुछ भी नहीं

जिस पर हमारी आँख ने मोती बिछाये रात भर
भेजा वही काग़ज़ उसे, हमने लिखा कुछ भी नहीं

इक शाम की दहलीज़ पर बैठे रहे वो देर तक
आँखों से की बातें बहुत, मुँह से कहा कुछ भी नहीं

दो-चार दिन की बात है, दिल ख़ाक में सो जायेगा
जब आग पर काग़ज़ रखा, बाक़ी बचा कुछ भी नहीं

एहसास की ख़ुशबू कहाँ, आवाज़ के जुगनू कहाँ
ख़ामोश यादों के सिवा, घर में रहा कुछ भी नहीं

1979

49

आ चांदनी भी मेरी तरह जाग रही है
पलकों पे सितारों को लिये रात खड़ी है

ये बात कि सूरत के भले दिल के बुरे हो
अल्लाह करे झूठ हो बहुतों से सुनी है

वो माथे का मतला हो होंठों के दो मिसरे
बचपन की ग़ज़ल ही मेरी महबूब रही है

ग़ज़लों ने वहीं ज़ुल्फ़ों के फैला दिये साये
जिन राहों पे देखा है बहुत धूप कड़ी है

हम दिल्ली भी हो आये हैं लाहौर भी घूमे
ऐ यार मगर तेरी गली तेरी गली है

50

सब कुछ ख़ाक हुआ है लेकिन चेहरा क्या नूरानी[1] है
पत्थर नीचे बैठ गया है, ऊपर बहता पानी है

बचपन से मेरी आदत है फूल छुपा कर रखता हूँ
हाथों में जलता सूरज है, दिल में रात की रानी है

दफ़्न हुए रातों के क़िस्से इक छत की ख़ामोशी में
सन्नाटों की चादर ओढ़े ये दीवार पुरानी है

इस को पाकर इतराओगे, खो कर जान गँवा दोगे
बादल का साया है दुनिया, हर शै आनी जानी है

दिल अपना इक चांद नगर है, अच्छी सूरत वालों का
शहर में आकर शायद हम को ये जागीर गँवानी है

तेरे बदन पे मैं फूलों से उस लम्हे का नाम लिखूँ
जिस लम्हे का मैं अफ़साना, तू भी एक कहानी है

1980

---

1. तेजस्वी

51

कोई जाता है यहाँ से न कोई आता है
ये दिया अपने अँधेरे में घुटा जाता है

सब समझते हैं वही रात की क़िस्मत होगा
जो सितारा के बुलन्दी पे नज़र आता है

बिल्डिंगें लोग नहीं हैं जो कहीं भाग सकें
रोज़ इन्सानों का सैलाब बढ़ा जाता है

मैं इसी खोज में बढ़ता ही चला जाता हूँ
किसका आँचल है जो कोहसारों पे लहराता है

मेरी आँखों में है इक अब्र[1] का टुकड़ा शायद
कोई मौसम हो सरे-शाम बरस जाता है

दे तसल्ली जो कोई आँख छलक उठती है
कोई समझाए तो दिल और भी भर आता है

अब्र के खेत में बिजली की चमकती हुई राह
जाने वालों के लिये रास्ता बन जाता है

1970

---

1. बादल

52

सुनो, पानी में ये किस की सदा है
कोई दरिया की तह में रो रहा है

सवेरे मेरी इन आँखों ने देखा
ख़ुदा चारों तरफ़ बिखरा हुआ है

समेटो और सीने में छुपा लो
ये सन्नाटा बहुत फैला हुआ है

पके गेहूँ की ख़ुशबू चीख़ती है
बदन अपना सुनहरा हो चला है

हक़ीक़त सुर्ख़ मछली जानती है
समन्दर कैसा बूढ़ा देवता है

हमारी शाख़ का नौ-ख़ेज़[1] पत्ता
हवा के होंट अक्सर चूमता है

मुझे उन नीली आँखों ने बताया
तुम्हारा नाम पानी पर लिखा है

1970

---

1. बिल्कुल नया

53

शेर मेरे कहाँ थे किसी के लिए
मैंने सब कुछ लिखा है तुम्हारे लिए

अपने दुख-सुख बहुत ख़ूबसूरत रहे
हम जिये भी तो इक-दूसरे के लिए

हमसफ़र ने मिरा साथ छोड़ा नहीं
अपने आँसू दिये रास्ते के लिए

इस हवेली में अब कोई रहता नहीं
चांद निकला किसे देखने के लिए

ज़िन्दगी और मैं दो अलग तो नहीं
मेरे सब फूल-काँटे इसी के लिए

शहर में अब मेरा कोई दुश्मन नहीं
सबको अपना लिया मैंने तेरे लिए

ज़हन में तितलियाँ उड़ रहीं हैं बहुत
कोई धागा नहीं बाँधने के लिए

एक तस्वीर ग़ज़लों में ऐसी बनी
अगले-पिछले ज़मानों के चेहरे लिए

1978

54

अदब की हद में हूँ मैं बे-अदब नहीं होता
तुम्हारा तज़किरा[1] अब रोज़ो-शब[2] नहीं होता

कभी-कभी तो छलक पड़ती हैं यूँ ही आँखें
उदास होने का कोई सबब नहीं होता

कई अमीरों की महरूमियाँ न पूछ के बस
ग़रीब होने का एहसास अब नहीं होता

वहाँ के लोग बड़े दिल-फ़रेब होते हैं
मिरा बहकना भी कोई अजब नहीं होता

मैं उस ज़मीन का दीदार करना चाहता हूँ
जहाँ कभी भी ख़ुदा का ग़ज़ब नहीं होता

1988

1. चर्चा
2. दिन रात

55

सुब्ह होती है छुपा लो हमको
रात भर चाहने वालो हमको

जब सहर चुप हो हँसा लो हमको
जब अन्धेरा हो जला लो हमको

हम हक़ीक़त हैं नज़र आते हैं
दास्तानों में छुपा लो हमको

दिन न पा जाये कहीं शब का राज़
सुब्ह से पहले उठा लो हमको

हम ज़माने के सताये हैं बहुत
अपने सीने से लगा लो हमको

वक़्त के होंठ हमें छू लेंगे
अन कहे बोल हैं गा लो हमको

कल खरीद्दारो के पहरे होंगे
आज की रात चुरा लो हमको

ख़ून का काम रवां रहना है
जिस जगह चाहो बहा लो हमको

दूर हो जाएंगे सूरज की तरह
हम न कहते थे उछालो हमको

1972

56

सीने में आग, आग में आहन भी चाहिए
रिमझिम बरसता बातों से सावन भी चाहिए

तलवार तोड़ने से तलाफ़ी कहाँ हुई
इन बुज़दिलों के हाथ में कंगन भी चाहिए

सीने में आफ़ताब सा इक दिल ज़रूर हो
हर घर में एक धूप का आँगन भी चाहिए

सूरज ख़ुद अपनी आग से सूरज है आज तक
इंसान के मिज़ाज में उलझन भी चाहिए

इस फ़ाहिशा ज़मीं के लिये आसमाँ बनो
दुनिया समेट लेने को दामन भी चाहिए

कोई फ़क़ीर हूँ जो कटोरा लिये फिरूँ
खाने के साथ खाने के बर्तन भी चाहिए

यूँ ज़िन्दगी के सीने से आँचल न खींचिए
सच्चाइयों में झूठ का कुछ फ़न भी चाहिए

बच्चों के साथ झाड़ियों में जुगनू ढूँढिए
दिल के मुआमलात में बचपन भी चाहिए

हम आदमी हैं या कोई बेहिस चट्टान हैं
दिल में किसी के नाम की धड़कन भी चाहिए

राहें रवायतों की अगर रौंदने चलूँ
सर पर मुझे बुज़ुर्गों का दामन भी चाहिए

1970

57

हमारी शोहरतों की मौत बेनामो-निशाँ होगी
न कोई तज़किरा[1] होगा न कोई दास्ताँ होगी

अगर मैं लौटना चाहूँ तो क्या मैं लौट सकता हूँ
वो दुनिया साथ जो मेरे चली थी अब कहाँ होगी

परिन्दे अपनी मिनकारों[2] में सब तारे छुपा लेंगे
जवानी चार दिन की चांदनी है फिर कहाँ होगी

दरख़्तों की ये छालें भी उतर जायेंगी पत्ते क्या
ये दुनिया धीरे धीरे एक दिन फिर से जवाँ होगी

हवायें रोयेंगी सर फोड़ लेंगी इन पहाड़ों से
कभी जब बादलों में चांद की डोली रवाँ होगी

किसे मालूम था हम लोग इक बिस्तर पे सोयेंगे
हिफ़ाज़त के लिये तलवार अपने दरम्याँ होगी

पसीना बन्द कमरे की उमस का जज़्ब है इसमें
हमारे तौलिये में धूप की ख़ुशबू कहाँ होगी

किसी गुमनाम पत्थर पर बहुत से नाम लिख दोगे
तो क़ुर्बानी हमारी इस तरह से जाविदाँ होगी

ज़मीनें तो मिरे अजदाद[3] ने सारी गवाँ दी हैं
मगर ये एक मुट्ठी ख़ाक ख़ुद अपना निशाँ होगी

समन्दर बूढ़े हो जायेंगे और इक फ़ाहिशा मछली
हमारे साहिलों और जंगलों की हुक्मराँ होगी

1970

1. चर्चा
2. चोंच
3. पूर्वज

58

कोई न जान सका वो कहाँ से आया था
और उसने धूप से बादल को क्यों मिलाया था

ये बात लोगों को शायद पसंद आई नहीं
मकान छोटा था लेकिन बहुत सजाया था

वो अब वहाँ है जहाँ रास्ते नहीं जाते
मैं जिस के साथ यहाँ पिछले साल आया था

सुना है उस पे चहकने लगे परिन्दे भी
वो एक पौधा जो हमने कभी लगाया था

चराग़ डूब गये कपकपाये होंटों पर
किसी का हाथ हमारे लबों तक आया था

बदन को छोड़ के जाना है आसमाँ की तरफ़
समन्दरों ने हमें ये सबक़ पढ़ाया था

तमाम उम्र मिरा दम इसी धुएँ में घुटा
वो इक चिराग़ था मैंने उसे बुझाया था

1970

59

दिमाग़ भी कोई मसरूफ़ छापाख़ाना है
वो शोर जैसे के अख़बार छपता रहता है

चराग़ जलते ही पोरस की फ़ौज भाग गई
गली में तन्हा सिकन्दर उदास बैठा है

हज़ारों पत्ते ज़मीं पर शहीद मिलते हैं
ख़िज़ाँ की धूप में नेज़ा कोई चमकता है

ज़मीं ने माँग लिया आसमाँ ने छीन लिया
हमारे पास न अब जिस्म है न साया है

वो बालकनी में आये तो रास्ता रुक जाये
सड़क पे चलने लगे तो हमारे जैसा है

जहाँ पे मिलती थीं दो किरनें उस शजर के तले
रज़ाई ओढ़े हुए इक फ़क़ीर बैठा है

1964

60

उदासी आसमाँ है दिल मेरा कितना अकेला है
परिन्दा शाम के पुल पर बहुत ख़ामोश बैठा है

मैं जब सो जाऊँ इन आँखों पे अपने होंठ रख देना
यक़ीं आ जायेगा पलकों तले भी दिल धड़कता है

तुम्हारे शहर के सारे दिये तो सो गए लेकिन
हवा से पूछना दहलीज़ पे ये कौन जलता है

अगर फ़ुरसत मिले पानी की तहरीरों को पढ़ लेना
हर इक दरिया हज़ारों साल का अफ़साना लिखता है

कभी मैं अपने हाथों की लकीरों से नहीं उलझा
मुझे मालूम है क़िस्मत का लिक्खा भी बदलता है

समन्दर पार करके जब मैं आया देखता क्या हूँ
हमारे दो घरों के बीच सन्नाटे का चेहरा है

मकाँ से क्या मुझे लेना मकाँ तुमको मुबारक हो
मगर ये घास वाला रेशमी क़ालीन मेरा है

1986

61

(पियाबाज प्याला पिया जाए ना के नाम)

लगी दिल की हमसे कही जाए ना
ग़ज़ल आँसुओं से लिखी जाए ना

अजब है कहानी मिरे प्यार की
लिखी जाय लेकिन पढ़ी जाए ना

सवेरे से पनघट पे बैठी रहूँ
पिया बिन गगरिया भरी जाए ना

न मन्दिर न मस्जिद न दैरो-हरम
हमारी कहीं भी सुनी जाए ना

ख़ुदा से ये बाबा दुआएँ करो
हमें छोड़कर वो कभी जाए ना

सुनाते-सुनाते सहर हो गई
मगर बात दिल की कही जाए ना

1987

62

एक चेहरा साथ-साथ रहा जो मिला नहीं
किसको तलाश करते रहे कुछ पता नहीं

शिद्दत की धूप तेज़ हवाओं के बावजूद
मैं शाख़ से गिरा हूँ नज़र से गिरा नहीं

आख़िर ग़ज़ल का ताजमहल भी है मक़बरा
हम ज़िन्दगी थे हमको किसी ने जिया नहीं

जिसकी मुख़ालफ़त हुई मशहूर हो गया
इन पत्थरों से कोई परिन्दा गिरा नहीं

तारीकियों में और चमकती है दिल की धूप
सूरज तमाम रात यहाँ डूबता नहीं

किसने जलाई बस्तियाँ बाज़ार क्यों लुटे
मैं चांद पर गया था मुझे कुछ पता नहीं

63

बेवफ़ा रास्ते बदलते हैं
हमसफ़र साथ-साथ चलते हैं

किसके आँसू छिपे हैं फूलों में
चूमता हूँ तो होंठ जलते हैं

उसकी आँखों को ग़ौर से देखो
मंदिरों में चराग़ जलते हैं

दिल में रहकर नज़र नहीं आते
ऐसे काँटे कहाँ निकलते हैं

एक दीवार वो भी शीशे की
दो बदन पास-पास जलते हैं

काँच के, मोतियों के, आँसू के
सब खिलौने ग़ज़ल में ढलते हैं

1977

64

‘बद्र’ दो आँखें बहुत ढूँढ रही हैं तुम को
चांद की चौदहवीं तारीख़ है ऊपर देखो

रात सोई हुई रानाइयों[1] ने मुझसे कहा
हम तुम्हारी ही ग़ज़ल हैं कभी हमको भी कहो

चांदनी रात में कह जाती है आहट जैसे
हम बहुत पास हैं आवाज़ न दो, हमको सुनो

जिससे उम्मीदे-वफ़ा होगी वही दुख देगा
बेवफ़ा जान के चाहो जिसे अब के चाहो

उस की क़ुदरत में नहीं रुक के कोई बात सुने
वक़्त आवाज़ है, आवाज़ को आवाज़ न दो

मुन्तज़िर कब से है अवराक़े-किताबे-हस्ती
दिल का कुछ रंग करो नोके-क़लम को चूमो

एक आवाज़, बहुत काफ़ी है सोने के लिये
लोग समझेंगे बने लेटे हो अब जाग पड़ो

आज कमरे में नहीं बैठने वाला मौसम
बर्फ़ गिरने की ख़बर गर्म है घर से निकलो

1963

---

1. सुन्दरता

65

सँवार नोक पलक अबरूओं[1] में ख़म कर दे
गिरे पड़े हुए लफ़्ज़ों को मोहतरम[2] कर दे

ग़ुरूर उस पे बहुत सजता है मगर कह दो
इसी में उसका भला है ग़ुरूर कम कर दे

यहाँ लिबास की क़ीमत है आदमी की नहीं
मुझे गिलास बड़े दे शराब कम कर दे

चमकने वाली है तहरीर मेरी क़िस्मत की
कोई चिराग़ की लौ को ज़रा सा कम कर दे

किसी ने चूम के आँखों को ये दुआ दी थी
ज़मीन तेरी ख़ुदा मोतियों से नम कर दे

1978

---

1. भवें
2. सम्माननीय

66

शोलए-गुल, गुलाबे-शोला क्या
आग और फूल का ये रिश्ता क्या

तुम मिरी ज़िन्दगी हो ये सच है
ज़िन्दगी का मगर भरोसा क्या

कितनी सदियों की क़िस्मतों का अमीं
कोई समझे बिसाते-लम्हा क्या

जो न आदाबे-दुश्मनी जाने
दोस्ती का उसे सलीक़ा क्या

जब कमर बाँध ली सफ़र के लिये
धूप क्या, मेंह क्या है साया क्या

जिन को दुनिया ग़ज़ल समझती है
पूछते हैं वो शे'रो-मिसरा क्या

काम की पूछते हो गर साहब
आशिक़ी के अलावा पेशा क्या

दिल दुखों को सभी सताते हैं
शे'र क्या, गीत क्या, फ़साना क्या

सब हैं किरदार इक कहानी के
वरना शैतान क्या, फ़रिश्ता क्या

जान कर हम बशीर 'बद्र' हुए
इसमें तक़दीर का नविश्ता क्या

1960

67

आया ही नहीं हम को आहिस्ता गुज़र जाना
शीशे का मुक़द्दर है टकरा के बिखर जाना

तारों की तरह शब के सीने में उतर जाना
आहट न हो क़दमों की इस तरह गुज़र जाना

नश्शे में सँभलने का फ़न यूँ ही नहीं आता
इन ज़ुल्फ़ों से सीखा है लहरा के सँवर जाना

भर जायेंगे आँखों में आँचल से बँधे बादल
याद आयेगा जब गुल पर शबनम का बिखर जाना

हर मोड़ पे दो आँखें हम से यही कहती हैं
जिस तरह भी मुमकिन हो तुम लौट के घर जाना

पत्थर को मिरा साया, आईना सा चमका दे
जाना तो मिरा शीशा यूँ दर्द से भर जाना

ये चांद सितारे तुम औरों के लिये रख लो
हमको यहीं जीना है, हमको यहीं मर जाना

जब टूट गया रिश्ता सर-सब्ज़ पहाड़ों से
फिर तेज़ हवा जाने किस को है किधर जाना

1970

68

सदियों की गठरी सर पर ले जाती है
दुनिया बच्ची बन कर वापस आती है

मैं दुनिया की हद से बाहर रहता हूँ
घर मेरा छोटा है लेकिन जाती है

दुनिया भर के शहरों का कल्चर यक्साँ
आबादी, तन्हाई बनती जाती है

मैं शीशे के घर में पत्थर की मछली
दरिया की ख़ुशबू, मुझमें क्यों आती है

पत्थर बदला, पानी बदला, बदला क्या
इन्साँ तो जज़्बाती था, जज़्बाती है

काग़ज़ की कश्ती, जुगनू झिलमिल-झिलमिल
शोहरत क्या है, इक नदिया बरसाती है

1998

69

जुगनू कोई सितारों की महफ़िल में खो गया
इतना न कर मलाल, जो होना था हो गया

परवरदिगार जानता है तू दिलों का हाल
मैं जी न पाऊँगा जो उसे कुछ भी हो गया

अब उसको देखकर नहीं धड़केगा मेरा दिल
कहना के मुझको ये भी सबक़ याद हो गया

बादल उठा था सबको रुलाने के वास्ते
आँचल भिगो गया, कहीं दामन भिगो गया

इक लड़की एक लड़के के काँधे पे सो गई
मैं उजली धुंधली यादों के कोहरे में खो गया

70

आँसुओं से धुली ख़ुशी की तरह
रिश्ते होते हैं शायरी की तरह

जब कभी बादलों में घिरता है
चांद लगता है आदमी की तरह

किसी रोज़न किसी दरीचे से
सामने आओ रोशनी की तरह

सब नज़र का फ़रेब है वरना
कोई होता नहीं किसी की तरह

ख़ूबसूरत, उदास, ख़ौफ़ज़दा
वो भी है बीसवीं सदी की तरह

जानता हूँ कि एक दिन मुझको
वक़्त बदलेगा डायरी की तरह

1957

71

मैं ग़ज़ल कहूँ, मैं ग़ज़ल पढ़ूँ, मुझे दे तो हुस्ने-ख़याल दे
तिरा ग़म ही है मेरी तरबियत[1], मुझे दे तो रंजो-मलाल दे

सभी चार दिन की हैं चांदनी, ये रियासतें, ये वज़ारतें
मुझे उस फ़क़ीर की शान दे, के ज़माना जिसकी मिसाल दे

मेरी सुब्हा तिरे सलाम से, मिरी शाम है तेरे नाम से
तिरे दर को छोड़ के जाऊँगा, ये ख़याल दिल से निकाल दे

मिरे सामने जो पहाड़ थे, सभी सर झुका के चले गए
जिसे चाहे तू ये उरुज[2] दे, जिसे चाहे तू ये ज़वाल[3] दे

बड़े शौक़ से इन्हीं पत्थरों को, शिकम[4] से बाँध के सो रहूँ
मुझे माले-मुफ़्त हराम है, मुझे दे तो रिज़्क़े-हलाल दे

1989

---

1. शिक्षण
2. उत्थान
3. पतन
4. पेट

72

गुलाबों की तरह दिल अपना शबनम में भिगोते हैं
मोहब्बत करने वाले ख़ूबसूरत लोग होते हैं

किसी ने जिस तरह अपने सितारों को सजाया है
ग़ज़ल के रेशमी धागों में यूँ मोती पिरोते हैं

पुराने मौसमों के नामे-नामी मिटते जाते हैं
कहीं पानी कहीं शबनम कहीं आँसू भिगोते हैं

यही अंदाज़ है मेरा समन्दर फ़त्ह करने का
मेरी काग़ज़ की कश्ती में कई जुगनू भी होते हैं

सुना है 'बद्र' साहब महफ़िलों की जान होते थे
बहुत दिन से वो पत्थर हैं, न हँसते हैं न रोते हैं

1986

73

चांद का टुकड़ा न सूरज का नुमाइन्दा हूँ
मैं न इस बात पे नाज़ाँ हूँ न शर्मिंदा हूँ

दफ़्न हो जाएगा जो सैकड़ों मन मिट्टी में
ग़ालिबन मैं भी उसी शहर का बाशिन्दा हूँ

ज़िन्दगी तू मुझे पहचान न पाई लेकिन
लोग कहते हैं कि मैं तेरा नुमाइन्दा हूँ

फूल सी क़ब्र से अक्सर ये सदा आती है
कोई कहता है बचा लो मैं अभी ज़िन्दा हूँ

तन पे कपड़े हैं क़दामत[1] की अलामत और मैं
सर बरहना यहाँ आ जाने पे शर्मिंदा हूँ

वाक़ई इस तरह मैंने कभी सोचा ही नहीं
कौन है अपना यहाँ किस के लिये ज़िन्दा हूँ

1970

---

1. प्राचीन

74

सन्नाटा क्या चुपके-चुपके कहता है
सारी दुनिया किसका रैन-बसेरा है

आसमान के दोनों कोनों के आख़िर
इक सितारा तेरा है, इक मेरा है

अण्डा, मछली छूकर जिनको पाप लगे
उनका पूरा हाथ लहू में डूबा है

आहिस्ता-आहिस्ता दिल पर दस्तक दो
धीरे-धीरे ये दरवाज़ा खुलता है

सूरज के घर से उसके घर तक जाना
कितना सीधा-साधा धूप का रस्ता है

सारी रात लिहाफ़ों में रोई आँखें
सब कहते थे रिश्ता-नाता झूठा है

1972

75

तारों भरी पलकों की बरसाई हुई ग़ज़लें
है कौन पिरोए जो बिखराई हुई ग़ज़लें

वो लब हैं कि दो मिसरे और दोनों बराबर के
ज़ुल्फ़ें कि दिले-शायर पे छाई हुई ग़ज़लें

ये फूल हैं या शेरों ने सूरतें पाई हैं
शाख़ें हैं कि शबनम में नहलाई हुई ग़ज़लें

ख़ुद अपनी ही आहट पर चौंके हों हिरन जैसे
यूँ राह में मिलती हैं घबराई हुई ग़ज़लें

इन लफ़्ज़ों की चादर को सरकाओ तो देखोगे
एहसास के घूँघट में शर्माई हुई ग़ज़लें

उस जाने-तग़ज़्ज़ुल[1] ने जब भी कहा कुछ कहिए
मैं भूल गया अक्सर याद आई हुई ग़ज़लें

---

1. ग़ज़ल की जान (प्रेमिका)

76

अजनबी पेड़ों के साये में मोहब्बत है बहुत
घर से निकले तो ये दुनिया ख़ूबसूरत है बहुत

रात तारों से उलझ सकती है, ज़र्रों से नहीं
रात को मालूम है जुगनू में हिम्मत है बहुत

मुख़्तसर[1] बातें करो, बेजा[2] वज़ाहत[3] मत करो
इस नई दुनिया के बच्चों में ज़ेहानत[4] है बहुत

किसलिए हम दिल जलायें, रात-दिन मेहनत करें
क्या ज़माना है, बुरे लोगों की इज़्ज़त है बहुत

सात सन्दूक़ों में भर कर दफ़्न कर दों नफ़रतें
आज इन्साँ को मोहब्बत की ज़रूरत है बहुत

लोग ज़िम्मेदारियों की क़ैद से आज़ाद हैं
शहर की मसरूफ़ियत[5] में घर से फ़ुर्सत है बहुत

धूप से कहना मुझे किरनों का कम्बल भेज दे
ग़ुर्बतों[6] का दौर है, जाड़े की शिद्दत है बहुत

सच अदालत से सियासत तक बहुत मसरूफ़[7] है
झूठ बोलो, झूठ में अब भी मोहब्बत है बहुत

---

1. संक्षिप्त
2. असंगत, बेकार
3. विस्तार
4. समझदारी
5. व्यस्तता, कार्य-भार
6. निर्धनता, ग़रीबी
7. व्यस्त

77

हर बात में महके हुए जज़्बात की ख़ुशबू
याद आई बहुत पहली मुलाक़ात की ख़ुशबू

छुप छुप के नई सुब्ह का मुँह चूम रही है
इन रेश्मी ज़ुल्फ़ों में बसी रात की ख़ुशबू

मौसम भी हसीनों की अदा सीख गये हैं
बादल हैं छुपाये हुए बरसात की ख़ुशबू

घर कितने ही छोटे हों घने पेड़ मिलेंगे
शहरों से अलग होती है क़स्बात की ख़ुशबू

होंठों पे अभी फूल की पत्ती की महक है
साँसों में रची है तिरी सौग़ात की ख़ुशबू

1975

78

प्यार पंछी, सोच पिंजरा, दोनों अपने साथ हैं
एक सच्चा, एक झूठा, दोनों अपने साथ हैं

आसमाँ के साथ हमको ये ज़मीं भी चाहिए
भोर बिटिया, साँझ माता, दोनों अपने साथ हैं

आग की दस्तार बाँधी, फूल की बारिश हुई
धूप पर्बत, शाम झरना, दोनों अपने साथ हैं

ये बदन की दुनियादारी और मेरा दरवेश दिल
झूठ माटी, साँच सोना, दोनों अपने साथ हैं

वो जवानी चार दिन की चांदनी थी अब कहाँ
आज बचपन और बुढ़ापा दोनों अपने साथ हैं

मेरा और सूरज का रिश्ता बाप बेटे का सफ़र
चंदा मामा, गंगा मैया, दोनों अपने साथ हैं

जो मिला वो खो गया, जो खो गया वो मिल गया
आने वाला, जाने वाला, दोनों अपने साथ हैं

79

वो महकती पलकों की ओट से कोई तारा चमका था रात में
मेरी बन्द मुट्ठी ना खोलिये वही कोहीनूर था हाथ में

मैं तमाम तारे उठा-उठा कर ग़रीब लोगों में बाँट दूँ
कभी एक रात वो आसमाँ का निज़ाम दें मेरे हाथ में

अभी शाम तक मेरे बाग़ में कहीं कोई फूल खिला न था
मुझे ख़ुशबुओं में बसा गया तेरा प्यार एक ही रात में

तेरे साथ इतने बहुत से दिन तो पलक झपकते गुज़र गये
हुई शाम खेल ही खेल में गई रात बात ही बात में

कोई इश्क़ है कि अकेला रेत की शाल ओढ़ के चल दिया
कभी बाल बच्चों के साथ आ ये पड़ाव लगता है रात में

कभी सात रंगों का फूल हूँ, कभी धूप हूँ, कभी धूल हूँ
मैं तमाम कपड़े बदल चुका तिरे मौसमों की बरात में

1977

80

नाम उसी का नाम सवेरे शाम लिखा
शेर लिखा या ख़त उसको गुमनाम लिखा

उस दिन पहला फूल खिला जब पतझड़ ने
पत्ती-पत्ती जोड़ के तेरा नाम लिखा

उस बच्चे की कॉपी अक्सर पढ़ता हूँ
सूरज के माथे पर जिसने शाम लिखा

कैसे दोनों वक़्त गले मिलते हैं रोज़
ये मंज़र मैंने दुश्मन के नाम लिखा

सात ज़मीनें, एक सितारा नया नया
सदियों बाद ग़ज़ल ने कोई नाम लिखा

'मीर', 'कबीर', 'बशीर' इसी मकतब के हैं
आ दिल के मकतब में अपना नाम लिखा

1998

81

कोई चिराग़ नहीं है मगर उजाला है
ग़ज़ल की शाख़ पे इक फूल खिलने वाला है

ग़ज़ब की धूप है इक बेलिबास पत्थर पर
पहाड़ पर तेरी बरसात का दुशाला है

अजीब लहजा है दुश्मन की मुस्कुराहट का
कभी गिराया है मुझको, कभी सँभाला है

निकल के पास की मस्जिद से एक बच्चे ने
फ़साद में जली मूरत पे हार डाला है

तमाम वादियों, सहरा में आग रोशन है
मुझे ख़िज़ाँ के इन्हीं मौसमों ने पाला है

1955

82

वक़्ते-रुख़सत कहीं तारे कहीं जुगनू आए
हार पहनाने मुझे फूल से बाज़ू आए

बस गई है मेरे अहसास में ये कैसी महक
कोई ख़ुशबू मैं लगाऊँ, तेरी ख़ुशबू आए

इन दिनों आपका आलम भी अजब आलम है
तीर खाया हुआ जैसे कोई आहू[1] आए

उसकी बातें कि गुलो लाला पे शबनम बरसे
सबको अपनाने का उस शोख़ को जादू आए

उसने छूकर मुझे पत्थर से फिर इन्सान किया
मुद्दतों बाद मेरी आँखों में आँसू आए

1992

---

1. हिरन

83

ज़मीं से आँच, ज़मीं तोड़कर निकलती है
अजीब तशनगी[1] इन बादलों से बरसी है

मेरी निगाह, मुख़ातब[2] से बात करते हुए
तमाम जिस्म के कपड़े उतार लेती है

सरों पे धूप की गठरी उठाये फिरते हैं
दिलों में जिनके बड़ी सर्द रात होती है

खड़े-खड़े मैं सफ़र कर रहा हूँ बरसों से
ज़मीन पाँव के नीचे कहाँ ठहरती है

बिखर रही है मिरी रात उसके शानां पर[3]
किसी की सुबह मिरे बाज़ुओं में सोती है

हवा के आँख नहीं, हाथ और पाँव नहीं
इसीलिए वो सभी रास्तों पे चलती है

1972

---

1. प्यास
2. जिसे सम्बोधित किया जाए
3. काँधों पर

84

उसको आईना बनाया, धूप का चेहरा मुझे
रास्ता फूलों का सबको, आग का दरिया मुझे

चांद चेहरा, ज़ुल्फ़ दरिया, बात ख़ुशबू, दिल चमन
इक तुम्हें देकर ख़ुदा ने, दे दिया क्या-क्या मुझे

जिस तरह वापस कोई ले जाये अपनी छुट्टियाँ
जाने वाला इस तरह से कर गया तन्हा मुझे

तुमने देखा है किसी मीरा को मंदिर में कभी
एक दिन उसने ख़ुदा से इस तरह माँगा मुझे

मेरी मुट्ठी में सुलगती रेत रखकर चल दिया
कितनी आवाज़ें दिया करता था ये दरिया मुझे

1981

85

दालानों की धूप, छतों की शाम कहाँ
घर से बाहर घर जैसा आराम कहाँ

बाज़ारों की चहल-पहल से रौशन है
इन आँखों में मन्दिर जैसी शाम कहाँ

मैं उसको पहचान नहीं पाया तो क्या
याद उसे भी आया मेरा नाम कहाँ

दिन-भर सूरज किसका पीछा करता है
रोज़ पहाड़ी पर जाती है शाम कहाँ

लोगों को सूरज का धोखा होता है
आँसू बनकर चमका मेरा नाम कहाँ

चन्दा के बस्ते में सूखी रोटी है
काजू, किशमिश, पिस्ते और बादाम कहाँ

86

ख़्वाब इन आँखों का कोई चुराकर ले जाए
क़ब्र के सूखे हुए फूल उठाकर ले जाए

मुन्तज़िर फूल में ख़ुशबू की तरह हूँ कब से
कोई झोंके की तरह आये उड़ाकर ले जाए

ये भी पानी है मगर आँखों का ऐसा पानी
जो हथेली पे रची मेहँदी छुड़ाकर ले जाए

मैं मोहब्बत से महकता हुआ ख़त हूँ मुझको
ज़िन्दगी अपनी किताबों में छुपाकर ले जाए

ख़ाक इन्साफ़ है इन अन्धे बुतों के आगे
रात थाली में चराग़ों से सजाकर ले जाए

उनसे ये कहना मैं पैदल नहीं आने वाला
कोई बादल मुझे काँधे पे बिठाकर ले जाए

1978

87

किसने मुझको सदा दी बता कौन है
ऐ, हवा तेरे घर में छिपा कौन है

बारिशों में किसी पेड़ को देखना
शाल ओढ़े हुए भीगता कौन है

ख़ुशबुओं में नहाई हुई शाख़ पर
फूल-सा मुस्कराता हुआ कौन है

मैं यहाँ धूप में तप रहा हूँ मगर
वो पसीने में डूबा हुआ कौन है

दिल को पत्थर हुए इक ज़माना हुआ
इस मकाँ में मगर बोलता कौन है

आसमानों को हमने बताया नहीं
डूबती शाम में डूबता कौन है

तुम भी मजबूर हो, हम भी मजबूर हैं
बेवफ़ा कौन है, बावफ़ा कौन है

1981

88

वो शाख़ है न फूल, अगर तितलियाँ न हों
वो घर भी कोई घर है जहाँ बच्चियाँ न हों

पलकों से आँसुओं की महक आनी चाहिए
ख़ाली है आसमान अगर बदलियाँ न हों

दुश्मन को भी ख़ुदा कभी ऐसा मकाँ न दे
ताज़ा हवा की जिसमें कहीं खिड़कियाँ न हों

मैं पूछता हूँ मेरी गली में वो आए क्यों
जिस डाकिए के पास तेरी चिट्ठियाँ न हों

89

जो इधर से जा रहा है वही मुझ पे मेहरबाँ है
कभी आग पासबाँ है, कभी धूप सायबाँ है

बड़ी आरज़ू थी मुझ से कोई ख़ाक रो के कहती
उतर आ मेरी ज़मीं पर तू ही मेरा आसमाँ है

मैं इसी गुमां में बरसों बड़ा मुतमइन रहा हूँ
तेरा जिस्म बेतग़य्युर मेरा प्यार जाविदाँ है

कभी सुर्ख़ मोमी शम्मएं वहाँ फिर से जल सकेंगी
वो लखौरी ईंटों वाला जो बड़ा सा इक मकाँ है

सभी बर्फ़ के मकानों पे कफ़न बिछे हैं लेकिन
ये धुआँ बता रहा है अभी आग भी यहाँ है

कोई आग जैसे कोहरे में दबी दबी सी चमके
तेरी झिलमिलाती आँखों में अजीब सा समाँ है

उन्हीं रास्तों ने जिन पर कभी तुम थे साथ मेरे
मुझे रोक रोक पूछा तेरा हमसफ़र कहाँ है

90

ये चांदनी भी जिन को छूते हुए डरती है
दुनिया उन्हीं फूलों को पैरों से मसलती है

शोहरत की बुलंदी भी पल भर का तमाशा है
जिस डाल पे बैठे हो वो टूट भी सकती है

लोबान की चिंगारी जैसे कोई रख दे
यूँ याद तेरी शब भर सीने में सुलगती है

आ जाता है ख़ुद खींच कर दिल सीने से पटरी पर
जब रात की सरहद से इक रेल गुज़रती है

आँसू कभी पलकों पर ता देर नहीं रुकते
उड़ जाते हैं ये पंछी जब शाख़ लचकती है

ख़ुशरंग परिंदों के लौट आने के दिन आये
बिछड़े हुए मिलते हैं जब बर्फ़ पिघलती है

91

शबनम हूँ सुर्ख़ फूल पे बिखरा हुआ हूँ मैं
दिल मोम और धूप में बैठा हुआ हूँ मैं

कुछ देर बाद राख मिलेगी तुम्हें यहाँ
लौ बनके इस चराग़ से लिपटा हुआ हूँ मैं

दो सख़्त ख़ुश्क़ रोटियाँ कब से लिए हुए
पानी के इन्तिज़ार में बैठा हुआ हूँ मैं

लाठी उठा के घाट पे जाने लगे हिरन
कैसे अजीब दौर में पैदा हुआ हूँ मैं

नस-नस में फैल जाऊँगा बीमार रात की
पलकों पे आज शाम से सिमटा हुआ हूँ मैं

अवराक़[1] में छिपाती थी, अक्सर वो तितलियाँ
शायद किसी किताब में रक्खा हुआ हूँ मैं

दुनिया है बेपनाह तो भरपूर ज़िन्दगी
दो औरतों के बीच में लेटा हुआ हूँ मैं

---

1. पन्नें

92

हवा में ढूँढ रही है कोई सदा मुझको
पुकारता है पहाड़ों का सिलसिला मुझको

मैं आसमानो-ज़मीं की हदें मिला देता
कोई सितारा अगर झुक के चूमता मुझको

चिपक गए मिरे तलवों से फूल शीशे के
ज़माना खींच रहा था बरहना-पा मुझको

वो शहसवार बड़ा रहमदिल था मेरे लिये
बढ़ा के नेज़ा ज़मीं से उठा लिया मुझको

मकान, खेत, सभी आग की लपेट में थे
सुनहरी घास में उसने छुपा दिया मुझको

दबीज़ होने लगी सब्ज़ काई की चादर
न चूम पायेगी अब सरफिरी हवा मुझको

पिला के रात का रस राक्षस बनाती थी
सवेरे लोगों से कहती थी देवता मुझको

तू एक हाथ में ले आग एक में पानी
तमाम रात हवा में जला बुझा मुझको

बस एक रात में सरसब्ज़ ये ज़मीन हुई
मिरे ख़ुदा ने कहाँ तक बिछा दिया मुझको

1978

93

सर से चादर, बदन से क़बा ले गई
ज़िन्दगी हम फ़क़ीरों से क्या ले गई

मेरी मुट्ठी में सूखे हुए फूल हैं
ख़ुशबुओं को उड़ाकर हवा ले गई

मैं समन्दर के सीने में चट्टान था
रात एक मौज आई, बहा ले गई

हम जो काग़ज़ थे अश्कों से भीगे हुये
क्यों चिराग़ों की लौ तक हवा ले गई

चांद ने रात मुझको जगाकर कहा
एक लड़की तुम्हारा पता ले गई

मेरी शोहरत सियासत से महफ़ूज़ है
ये तवायफ़ भी अस्मत बचा ले गई

94

कोई लश्कर है कि बढ़ते हुए ग़म आते हैं
शाम के साये बहुत तेज़ क़दम आते हैं

दिल वो दरवेश है जो आँख उठाता ही नहीं
उसके दरवाज़े पे सौ एहले-करम आते हैं

मुझसे क्या बात लिखानी है के अब मेरे लिए
कभी सोने, कभी चांदी के क़लम आते हैं

मैंने दो-चार किताबें तो पढ़ी हैं लेकिन
शहर के तौर-तरीक़े मुझे कम आते हैं

ख़ूबसूरत-सा कोई हादसा आँखों में लिये
घर की दहलीज़ पे डरते हुए हम आते हैं

1978

95

ये चिराग़ बेनज़र है ये सितारा बेज़ुबाँ है
अभी तुम से मिलता जुलता कोई दूसरा कहाँ है

वही शख़्स जिस पे अपने दिलो-जाँ निसार कर दूँ
वो अगर ख़फ़ा नहीं है तो ज़रूर बदगुमाँ है

कभी पा के तुझ को खोना, कभी खो के तुझ को पाना
ये जनम जनम का रिश्ता तेरे मेरे दरमियाँ है

मिरे साथ चलने वाले तुझे क्या मिला सफ़र में
वही दुख भरी ज़मीं है, वही ग़म का आसमाँ है

मैं इसी गुमाँ में बरसों बड़ा मुतमइन रहा हूँ
तिरा जिस्म बेतग़य्युर[1] मेरा प्यार जाविदाँ[2] है

उन्हीं रास्तों ने जिन पर कभी तुम थे साथ मेरे
मुझे रोक रोक पूछा तिरा हमसफ़र कहाँ है

1958

1. अपरिवर्तनशील
2. अमर

96

भीगी हुई आँखों का ये मंज़र न मिलेगा
घर छोड़ के मत जाओ कहीं घर न मिलेगा

फिर याद बहुत आयेगी ज़ुल्फ़ों की घनी शाम
जब धूप में साया कोई सर पर न मिलेगा

आँसू को कभी ओस का क़तरा न समझना
ऐसा तुम्हें चाहत का समन्दर न मिलेगा

इस ख़्वाब के माहौल में बेख़्वाब हैं आँखें
जब नींद बहुत आयेगी, बिस्तर न मिलेगा

ये सोच लो अब आख़िरी साया है मोहब्बत
इस दर से उठोगे तो कोई दर न मिलेगा

1980

97

अच्छा तुम्हारे शहर का दस्तूर हो गया
जिसको गले लगा लिया वो दूर हो गया

काग़ज़ में दब के मर गए कीड़े किताब के
दीवाना बे-पढ़े-लिखे मशहूर हो गया

महलों में हमने कितने सितारे सजा दिए
लेकिन ज़मीं से चांद बहुत दूर हो गया

तन्हाइयों ने तोड़ दी हम दोनों की अना[1]
आईना बात करने पे मजबूर हो गया

सुब्हे-विसाल पूछ रही है अजब सवाल
वो पास आ गया कि बहुत दूर हो गया

कुछ फल ज़रूर आएँगे रोटी के पेड़ में
जिस दिन तेरा मतालबा[2] मंज़ूर हो गया

1988

---

1. अहं
2. माँग

98

साथ चलते आ रहे हैं पास आ सकते नहीं
इक नदी के दो किनारों को मिला सकते नहीं

देने वाले ने दिया सब कुछ अजब अंदाज़ में
सामने दुनिया पड़ी है और उठा सकते नहीं

उसकी भी मजबूरियाँ हैं, मेरी भी मजबूरियाँ हैं
रोज़ मिलते हैं मगर, घर में बता सकते नहीं

आदमी क्या है गुज़रते वक़्त की तस्वीर है
जाने वाले को सदा देकर बुला सकते नहीं

किसने किस का नाम ईंटों पे लिखा है ख़ून से
इश्तिहारों से ये दीवारें छुपा सकते नहीं

उस की यादों से महकने लगता है सारा बदन
प्यार की ख़ुशबू को सीने में छुपा सकते नहीं

राज़ जब सीने से बाहर हो गया अपना कहाँ
रेत पे बिखरे हुए आँसू उठा सकते नहीं

शहर में रहते हुए हम को ज़माना हो गया
कौन रहता है कहाँ कुछ भी बता सकते नहीं

पत्थरों के बर्तनों में आँसुओं को क्या रखें
फूल को, लफ़्ज़ों के गमलों में खिला सकते नहीं

1975

99

सिसकते आब में किस की सदा है
कोई दरिया की तह में रो रहा है

सवेरे मेरी इन आँखों ने देखा
ख़ुदा चारों तरफ़ बिखरा हुआ है

समेटो और सीने में छुपा लो
ये सन्नाटा बहुत फैला हुआ है

पके गेंहूँ की ख़ुशबू चीख़ती है
बदन अपना सुनेहरा हो चला है

हक़ीक़त सुर्ख़ मछली जानती है
समन्दर कैसा बूढ़ा देवता है

हमारी शाख़ का नौख़ेज़ पत्ता
हवा के होंठ अक्सर चूमता है

मुझे उन नीली आँखों ने बताया
तुम्हारा नाम पानी पर लिखा है

100

यहाँ सूरज हँसेंगे आँसुओं को कौन देखेगा
चमकती धूप होगी जुगनुओं को कौन देखेगा

फलों की बाग़वानी में तो बारिश की दुआ होगी
गुज़रते ख़ूबसूरत बादलों को कौन देखेगा

अगर हम साहिलों पे डोर काँटे ले के बैठेंगे
तो मौजों में चमकती तितलियों को कौन देखेगा

है सर्दी वाक़ई लेकिन घने कोहरे के बादल में
पहाड़ों से उतरती इन बसों को कौन देखेगा

बहुत अच्छा-सा कोई सूट पहनें इस ग़रीबी में
उजालों में छिपी इन बदलियों को कौन देखेगा

अभी अपने इशारे पर हमें चलना नहीं आया
सड़क की लाल-पीली बत्तियों को कौन देखेगा

1980

101

मेरे दिल की राख कुरेद मत इसे मुस्कुरा के हवा न दे
ये चराग़ फिर भी चराग़ है कहीं तेरा हाथ जला न दे

मैं उदासियाँ न सजा सकूँ कभी जिस्मो-जाँ के मज़ार पर
न दिये जलें मेरी आँख में मुझे इतनी सख़्त सज़ा न दे

नये दौर के नये ख़्वाब हैं, नये मौसमों के गुलाब हैं
ये मोहब्बतों के चराग़ हैं इन्हें नफ़रतों की हवा न दे

ज़रा देख चांद की पत्तियों ने बिखर-बिखर के तमाम शब
तिरा नाम लिखा है रेत पर कोई लहर आ के मिटा न दे

यहाँ लोग रहते हैं रात-दिन किसी मस्लहत[1] की नक़ाब में
ये तेरी निगाह की सादगी कहीं दिन के राज़ बता न दे

मेरे साथ चलने के शौक़ में बड़ी धूप सर पर उठाएगा
तेरा नाक-नक़्शा है मोम का, कहीं ग़म की आग घुला न दे

1977

---

1. भेद

102

किताबें, रिसाले न अख़बार पढ़ना
मगर दिल को हर रात इक बार पढ़ना

सियासत की अपनी अलग इक ज़ुबाँ है
लिखा हो जो इक़रार, इनकार पढ़ना

अलामत नये शहर की है सलामत
हज़ारों बरस की ये दीवार पढ़ना

किताबें, किताबें, किताबें, किताबें
कभी तो वो आँखें, वो रुख़सार पढ़ना

मैं काग़ज़ की तक़दीर पहचानता हूँ
सिपाही को आता है तलवार पढ़ना

बड़ी पुरसुकूँ धूप जैसी वो आँखें
किसी शाम झीलों के उस पार पढ़ना

ज़ुबानों की ये ख़ूबसूरत इकाई
ग़ज़ल के परिन्दों का अशआर पढ़ना

1988

103

अब किसे चाहें, किसे ढूँढा करें
वो भी आख़िर मिल गया अब क्या करें

हल्की-हल्की बारिशें होती रहे
हम भी फूलों की तरह भीगा करें

आँख मूँदे उस गुलाबी धूप में
देर तक बैठे उसे सोचा करें

दिल, मोहब्बत, दीन, दुनिया, शायरी
हर दरीचे से तुझे देखा करें

घर नया, बर्तन नये, कपड़े नये
इन पुराने काग़ज़ों का क्या करें

1986

104

ख़ुशबू की तरह आया, वो तेज़ हवाओं में
माँगा था जिसे हमने दिन रात दुआओं में

तुम छत पे नहीं आए, मैं घर से नहीं निकला
ये चांद बहुत भटका सावन की घटाओं में

इस शहर में इक लड़की बिल्कुल है ग़ज़ल जैसी
बिजली सी घटाओं में, ख़ुशबू सी हवाओं में

मौसम का इशारा है ख़ुश रहने दो बच्चों को
मासूम मोहब्बत है फूलों की ख़ताओं में

भगवान ही भेजेंगे चावल से भरी थाली
मज़लूम परिन्दों की मासूम सभाओं में

दादा बड़े भोले थे सबसे यही कहते थे
कुछ ज़हर भी होता है अंग्रेज़ी दवाओं में

1988

105

कभी तो शाम ढले, अपने घर गए होते
किसी की आँख में रहकर सँवर गए होते

सिंगारदान में रहते हो, आईने की तरह
किसी के हाथ से गिरकर बिखर गए होते

ग़ज़ल ने बहते हुए फूल चुन लिए वर्ना
ग़मों में डूब के हम लोग मर गए होते

अजीब रात थी, कल तुम भी आके लौट गये
जब आ गए थे तो, पल-भर ठहर गए होते

बहुत दिनों से है दिल अपना ख़ाली-ख़ाली सा
ख़ुशी नहीं तो उदासी से भर गए होते

106

सुब्ह का झरना, हमेशा हँसने वाली औरतें
झुटपुटे की नदियाँ, ख़ामोश गहरी औरतें

संतुलित कर देती हैं ये, सर्द मौसम का मिज़ाज
बर्फ़ के टीलों पे चढ़ती, धूप-जैसी औरतें

सब्ज़ नारंगी, सुनहरी, खट्टी-मीठी लड़कियाँ
भारी जिस्मों वाली, टपके आम-जैसी औरतें

सड़कों, बाज़ारों, मकानों, दफ़्तरों में रात दिन
लाल-पीली, सब्ज़-नीली, जलती-बुझती औरतें

शहर में एक बाग़ है और बाग़ में तालाब है
तैरती हैं इसमें सातों रंग वाली औरतें

सैकड़ों ऐसी दुकानें हैं, जहाँ मिल जायेंगी
धात की, पत्थर की, शीशे की, रबर की औरतें

इनके अन्दर पक रहा है वक़्त का ज्वालामुखी
किन पहाड़ों को ढके हैं, बर्फ़-जैसी औरतें

सब्ज़ सोने के पहाड़ों पर क़तार अन्दर क़तार
सर से सर जोड़े खड़ी हैं लाँबी-लाँबी औरतें

इक ग़ज़ल में सैकड़ों अफ़साने, नज़्में और गीत
इस सराय में छुपी हैं कैसी-कैसी औरतें

वाक़ई दोनों बहुत मज़्लूम हैं नक़्क़ाद और
माँ कहे जाने की हसरत में सुलगती औरतें

107

सौ ख़ुलूस[1] बातों में सब करम ख़यालों में
बस ज़रा वफ़ा कम है तेरे शहर वालों में

पहली बार नज़रों ने चांद बोलते देखा
हम जवाब क्या देते खो गये सवालों में

रात तेरी यादों ने दिल को इस तरह छेड़ा
जैसे कोई चुटकी ले नर्म नर्म गालों में

यूँ किसी की आँखों में सुब्ह तक अभी थे हम
जिस तरह रहे शबनम फूल के प्यालों में

मेरी आँख के तारे अब न देख पाओगे
रात के मुसाफ़िर थे खो गये उजालों में

1958

---

1. निश्छलता

108

आईना धूप का, दरया में दिखाता है मुझे
मेरा दुश्मन, मेरे लहजे में बुलाता है मुझे

आँसुओं से मेरी तहरीर नहीं मिट सकती
कोई काग़ज़ हूँ के पानी से डराता है मुझे

सर पे सूरज की सवारी मुझे मंज़ूर नहीं
अपना क़द धूप में छोटा नज़र आता है मुझे

दूध पीते हुए बच्चे की तरह है दिल भी
दिन में सो जाता है रातों मे जगाता है मुझे

धूप की आग से फूलों के बदन रौशन हैं
सात रंगों में तेरा दर्द सजाता है मुझे

रोज़ कहता है के गिरती हुई दीवार हूँ मैं
एक बादल है जो रह रह के डराता है मुझे

ऐसा लगता है के उस ने मुझे 'ग़ालिब' जाना
न उठाता है मुझे और न बिठाता है मुझे

1998

109

सोये कहाँ थे, आँखों ने तकिये भिगोये थे
हम भी कभी किसी के लिए ख़ूब रोये थे

अँगनाई में खड़े हुए बेरी के पेड़ से
वो लोग चलते वक़्त गले मिल के रोये थे

हर साल ज़र्द फूलों का इक क़ाफ़िला रुका
उसने जहाँ पे धूल अटे पाँव धोये थे

इस हादसे से मेरा तआल्लुक़ नहीं कोई
मेले में एक साल कई बच्चे खोये थे

आँखों की किश्तियों में सफ़र कर रहे हैं वो
जिन दोस्तों ने दिल के सफ़ीने[1] डुबोये थे

कल रात मैं था, मेरे अलावा कोई न था
शैतान मर गया था, फ़रिश्ते भी सोये थे

1978

---

1. नावें

110

है अजीब शहर की ज़िन्दगी, न सफ़र रहा ना क़याम है
कहीं कारोबार सी दोपहर, कहीं बदमिज़ाज सी शाम है

कहाँ अब दुआओं की बरकतें, वो नसीहतें, वो हिदायतें,
ये ज़रूरतों का ख़ुलूस है, ये मुतालबों का सलाम है

यूँ ही रोज़ मिलने की आरज़ू बड़ी रख-रखाव की गुफ़्तगू
ये शराफ़तें नहीं बेग़रज़, उसे आप से कोई काम है

वो दिलों में आग लगाएगा, मैं दिलों की आग बुझाऊँगा
उसे अपने काम से काम है, मुझे अपने काम से काम है

न उदास हो, न मलाल कर, किसी बात का न ख़याल कर
कई साल बाद मिले हैं हम, तिरे नाम आज की शाम है

कोई नग़मा धूप के गाँव सा, कोई नग़मा शाम की छाँव सा
ज़रा इन परिन्दों से पूछना ये कलाम किस का कलाम है

1998

111

दूसरों को हमारी सज़ाएँ न दे
चांदनी रात को बद्दुआएँ न दे

फूल से आशिक़ी का हुनर सीख ले
तितलियाँ ख़ुद रुकेंगी, सदाएँ न दे

सब गुनाहों का इक़रार करने लगे
इस क़दर ख़ूबसूरत सज़ाएँ न दे

मोतियों को छुपा सीपियों की तरह
बेवफ़ाओं को अपनी वफ़ाएँ न दे

मैं बिखर जाऊँगा आँसुओं की तरह
इस क़दर प्यार की बद्दुआएँ न दे

मैं दरख़्तों की सफ़[1] का भिखारी नहीं
बेवफ़ा मौसमों की क़बाएँ[2] न दे

1977

1. पंक्ति
2. चोग़ा

112

उदास रात में कोई तो ख़्वाब दे जाओ
मेरे गिलास में थोड़ी शराब दे जाओ

बहुत-से और भी घर हैं ख़ुदा की बस्ती में
फ़क़ीर कब से खड़ा है जवाब दे जाओ

मैं ज़र्द पत्तों पे शबनम सजा के लाया हूँ
किसी ने मुझ से कहा था हिसाब दे जाओ

मेरी नज़र में रहे डूबने का मंज़र भी
ग़ुरुब[1] होता हुआ आफ़ताब दे जाओ

फिर इसके बाद नज़ारे-नज़र को तरसेंगे
वो जा रहा है ख़िज़ाँ के गुलाब दे जाओ

हज़ार सफ़हों का दीवान कौन पढ़ता है
'बशीर बद्र' कोई इन्तख़ाब दे जाओ

1977

---

1. डूबता हुआ

113

अपनी जगह जमे हैं कहने को कह रहे थे
सब लोग वरना बहते दरया में बह रहे थे

ऐसा लगा कि हम तुम कोहरे में चल रहे हों
दो फूल ऊँची नीची लहरों पे बह रहे थे

दिल उजले पाक फूलों से भर दिया था किसने
उस दिन हमारी आँखों से अश्क बह रहे थे

अक्सर शराब पी कर पढ़ती थी वो दुआएं
हम एक ऐसी लड़की के साथ रह रहे थे

अख़बार में तो ऐसी कोई ख़बर नहीं थी
झुलसे मकान झूठे अफ़साने कह रहे थे

1971

114

तारों के चिलमनों से कोई झाँकता भी हो
इस कायनात में कोई मंज़र नया भी हो

इतनी सियाह रात में किसको सदाएँ दूँ
ऐसा चराग़ दे जो कभी बोलता भी हो

दरवेश कोई आये तो आराम से रहे
तेरे फ़क़ीर का घर इतना बड़ा भी हो

सारे पहाड़ काट के मैं मिलने आऊँगा
हाँ, मेरे इन्तिज़ार में दरिया रुका भी हो

रंगों की क्या बहार है पत्थर के बाग़ में
लेकिन मेरी ज़मीन का हिस्सा हरा भी हो

उसके लिए तो मैंने यहाँ तक दुआएँ की
मेरी तरह से कोई उसे चाहता भी हो

115

सूरज भी बँधा होगा देखो मेरे बाज़ू में
इस चांद को भी रखना सोने के तराज़ू में

अब हमसे शराफ़त की उम्मीद न कर दुनिया
पानी नहीं मिल सकता तपती हुई बालू में

तारीक[1] समन्दर के सीने में गुहर[2] ढूँढो
जुगनू भी चमकते हैं बरसात के आँसू में

दिलदारो-सनम झूटे, ये दैरो-हरम[3] झूटे
हम आ ही गये आख़िर दुनिया तिरे जादू में

ख़ाबीदा[4] गुलाबों पर ये ओस बिछी कैसे
एहसास चमकता है उसलूब[5] की ख़ुशबू में

1990

---

1. अँधेरा
2. मोती
3. मन्दिर, मस्जिद
4. सोया हुआ
5. शैली

116

शाम से रास्ता तकता होगा
चांद खिड़की में अकेला होगा

धूप की शाख़ पे तन्हा-तन्हा
वह मोहब्बत का परिन्दा होगा

नींद में डूबी महकती साँसें
ख़्वाब में फूल-सा चेहरा होगा

मुस्कुराता हुआ झिलमिल आँसू
तेरी रहमत का फ़रिश्ता होगा

ख़ूबसूरत नयी दुनिया होगी
मुझसे अच्छा मिरा बेटा होगा

117

वो सादगी, न करे कुछ भी तो अदा ही लगे
वो भोलापन है के बेबाकी भी हया ही लगे

ये ज़ाफ़रानी पुलोवर उसी का हिस्सा है
कोई जो दूसरा पहने तो दूसरा ही लगे

नहीं है मेरे मुक़द्दर में रौशनी, न सही
ये खिड़की खोलो ज़रा सुबह की हवा ही लगे

अजीब शख़्स है नाराज़ हो के हँसता है
मैं चाहता हूँ, ख़फ़ा हो तो ख़फ़ा ही लगे

हसीं तो और हैं, लेकिन कोई कहाँ तुझ-सा
जो दिल जलाये बहुत, फिर भी दिलरुबा ही लगे

हज़ारों भेस में फिरते हैं राम और रहीम
कोई ज़रूरी नहीं है भला, भला ही लगे

118

वो जहाँ थे, वहीं खड़े होंगे
जो किसी बात पर अड़े होंगे

पालनों में कहीं पड़े होंगे
कल जो सूरज बहुत बड़े होंगे

अब नये ज़हन[1] और आयेंगे
इम्तिहानात[2] भी कड़े होंगे

एक छोटे-से सायबाँ[3] के लिए
उम्र भर धूप से लड़े होंगे

ताज-दारों के सर-चढ़े हीरे
आज पापोश[4] में जड़े होंगे

मैं उठाकर ग़ज़ल बना दूँगा
लफ़्ज़[5] जितने गिरे पड़े होंगे

सात रंगों के सात ताज महल
एक दीवार में जड़े होंगे

धूप कब तक मुझे सताएगी
कल मिरे पेड़ भी बड़े होंगे

कितने लहजे बशीर 'बद्र' हुए
अपने पैरों पे कब खड़े होंगे

---

1. प्रतिभायें, दिमाग़
2. परीक्षायें
3. छज्जा
4. जूता

5. शब्द

119

रेंगते दौड़ते हुए डब्बे
साये की तरह झाँकते चेहरे

गर्दनों में लटक रही है ज़ुबाँ
और आँखों में रक्खे हैं शीशे

मछलियाँ चल रही हैं पंजों पर
जिनके चेहरे हैं लड़कियों जैसे

साज़ पुरशोर-ओ-कर्ब[1] हँसता है
बोलियाँ बोलते हुए डब्बे

इक बड़ा काले जादू का कमरा
और परदे पे लड़कियाँ लड़के

नंगी दीवार का लिबास बने
काग़ज़ी जिस्म-ओ-रंग के चेहरे

---

1. बेचैनी

120

रात के शहर में तारों की कमाँ रौशन है
चांद में कौन है ये किसका मकाँ रौशन है

जिसको देखो मिरे माथे की तरफ देखे है
दर्द होता है कहाँ और कहाँ रौशन है

याद जब घर की कभी आती है तो लगता है
रात की राह में शीशे का मकाँ रौशन है

चांद जिस आग में जलता है उसी शोले से
बर्फ़ की वादी में कोहरे का धुआँ रौशन है

जैसे दरयाओं में ख़ामोश चराग़ों का सफ़र
ऐसा नस-नस में मिरे दर्दे-रवाँ रौशन है

सुब्ह से ढूँढ रहे थे के कहाँ है सूरज
अब नज़र आये हो तो सारा जहाँ रौशन है

1967

121

बाहर न आओ, घर में रहो, तुम नशे में हो
सो जाओ, दिन को रात करो, तुम नशे में हो

दरया से इख़्तेलाफ़ का अंजाम सोच लो
लहरों के साथ-साथ बहो, तुम नशे में हो

बेहद शरीफ़ लोगों से कुछ फ़ासिला रखो
पी लो, मगर कभी न कहो, तुम नशे में हो

क्या दोस्तों ने तुमको पिलायी है रात-भर
अब दुश्मनों के साथ रहो, तुम नशे में हो

काग़ज़ का यह लिबास, चराग़ों के शहर में
जानाँ, संभल-संभल के चलो, तुम नशे में हो

मासूम तितलियों को मसलने का शौक़ है
तौबा करो, ख़ुदा से डरो, तुम नशे में हो

नाज़ुक मिज़ाज, आप क़यामत हो मीर जी
दो दिन सराय-मीर रहो, तुम नशे में हो

122

नारियल के दरख़्तों[1] की पागल हवा, खुल गये बादबां[2] लौट जा, लौट जा
सावँली सरज़मीं[3] पर मैं अगले बरस, फलू खिलने से पहले ही आ जाऊगाँ

गर्म कपड़ों का सन्दूक़ मत खोलना, वरना यादों की काफ़ूर जैसी महक
ख़ून में आग बनकर उतर जायेगी, सबुह तक यह मकां ख़ाक हो जायेगा

लॉन में एक भी बेल ऐसी नही, जो देहाती परिन्दे के पर बांध ले
जंगली आम की जानलेवा महक, जब बुलायेगी वापस चला जायेगा

मेरे बचपन के मन्दिर की वो मूर्ति धूप के आसमां पे खड़ी थी, मगर
एक दिन जब मिरा क़द[4] मुकम्मल[5] हुआ, उसका सारा बदन बर्फ़ में धंस गया

अनगिनत काले-काले परिन्दों के पर टूटकर ज़र्द[6] पानी को ढकने लगे
फ़ाख़्ता[7] धूप के पुल पे बैठी रही, रात का हाथ चुपचाप बढ़ता गया

1970

---

1. वृक्षों
2. नाव में लगाया जाने वाला परदा, जिसमें हवा भर जाने से नाव चलती है
3. पृथ्वी
4. आकार

123

ज़िन्दगी मौसमों की हिजरत है
दिल का पतझड़ भी ख़ूबसूरत है

चांद में इक उदास लड़की है
उससे मेरी ख़तो-किताबत है

उजले-उजले चिराग़ पहने हुए
रात इक साँवली-सी औरत है

धूप बालों में झिलमिलाने लगी
आईना कितना बेमुरव्वत है

दिन में ये हमसे भी गया-गुज़रा
रात में चांद ख़ूबसूरत है

आदमी आज तक अधूरा है
एक औरत, हज़ार औरत है

उसके चारों तरफ समुन्दर है
दिल बड़ी ख़ुशनुमा इमारत है

क्या यहाँ आदमी नहीं रहते
आपका शहर ख़ूबसूरत है

सुब्ह सूरज के साथ सो लेंगे
रात भर जागना इबादत है

124

ख़ूबसूरत हैं बहुत रास्ते, खो जाऊँगा
अब मुझे नींद जहाँ आयेगी, सो जाऊँगा

मैं भी उड़ता हुआ बादल हूँ, मुझे ख़त लिखना
रोज़ सूखे हुए जंगल को भिगो जाऊँगा

दिल से निकला हुआ आँसू हूँ छिपा ले मुझको
आसमानों में कई दाग़ हैं, धो जाऊँगा

चांद से मेरी मुलाक़ात ज़रूरी है, मगर
चांद धरती पे अगर उतरेगा, तो जाऊँगा

धूप तलवों को मेरे चूमेगी जाते-जाते
बदलियाँ भेज दे, मैं ओढ़ के सो जाऊँगा

125

कहीं पनघटों की डगर नहीं, कहीं आँचलों का नगर नहीं
ये पहाड़ धूप के पेड़ हैं, कोई सायादार शजर नहीं

वो बिका है कितने करोड़ में ज़रा उसका हाल बताइये
कोई शख़्स भूख से मर गया, ये ख़बर तो कोई ख़बर नहीं

ये महकते फूलों की छतरियाँ, मिरी मेहरबाँ, मिरी साइबाँ
तिरे साथ धूप के रास्तों का सफ़र तो कोई सफ़र नहीं

मैं वहाँ से आया हूँ आज भी जहाँ प्यार दिल का चराग़ है
ये अजीब रात का शहर है, कहीं रोशनी का गुज़र नहीं

ये ज़मीन दर्द की नहर है, ये ज़मीन प्यार का शहर है
मैं इसी ज़मीन का ख़्वाब हूँ, मुझे आसमान का डर नहीं

कोई 'मीर' हो के 'बशीर' हो, जो तुम्हारे नाज़ उठायें हम
ये 'ज़फ़र' की दिल्ली है बाअदब यहाँ हर किसी का गुज़र नहीं

1987

126

कहीं चांद राहों में खो गया, कहीं चांदनी भी भटक गई
मैं चराग़ वो भी बुझा हुआ, मिरी रात कैसे चमक गई

कभी उजला-उजला सा नाम हूँ, कभी खोया-खोया कलाम[1] हूँ
मुझे सुब्ह किरनों से भर गई, मुझे शाम फूलों से ढक गई

तुझे भूल जाने की कोशिशें कभी क़ामयाब न हो सकीं
तिरी याद शाख़े-गुलाब है, जो हवा चली तो लचक गई

तिरे हाथ से मिरे होंठ तक वही इन्तिज़ार की प्यास है
मिरे नाम की जो शराब थी, कहीं रास्ते में छलक गई

कभी हम मिले भी तो क्या मिले, वही दूरियाँ, वही फ़ासले
न कभी हमारे क़दम बढ़े, न कभी तुम्हारी झिझक गई

मिरी दास्ताँ का उरूज था तिरी नर्म पलकों की छाँव में
मिरे साथ था तुझे जागना तिरी आँख कैसे झपक गई

---

1. काव्य, रचना

127

उस दर का दरबान बना दे या अल्लाह
मुझको भी सुल्तान बना दे या अल्लाह

इन आँखों से तेरे नाम की बारिश हो
पत्थर हूँ, इन्सान बना दे या अल्लाह

सहमा दिल, टूटी कश्ती, चढ़ता दरया
हर मुश्किल आसान बना दे या अल्लाह

मैं जब चाहूँ झाँक के तुझको देख सकूँ
दिल को रोशनदान बना दे या अल्लाह

मेरा बच्चा सादा काग़ज़ जैसा है
इक हर्फ़-ईमान बना दे या अल्लाह

चांद-सितारे झुक कर क़दमों को चूमें
ऐसा हिन्दोस्तान बना दे या अल्लाह

1989

128

आज दरिया, चढ़ा-चढ़ा-सा है
कोई हम से ख़फ़ा-ख़फ़ा-सा है

जिस्म जैसे भरा-भरा सागर
गुफ़्तगू में नशा-नशा-सा है

नाक-नक़्शा, बस, आप ही जैसे
नाम भी कुछ भला-भला-सा है

शहर यादों का एक बसाया था
अब निशाँ भी मिटा-मिटा-सा है

दिल से एक रोशनी जहाँ में थी
ये दीया भी बुझा-बुझा-सा है

बाग़ है एक, फूल लाखों हैं
रंग सबका जुदा-जुदा-सा है

शबनमी आग भी जलाती है
फूल का दिल जला-जला-सा है

किसको फ़ुर्सत कि इक नज़र देखे
'बद्र' तनहा बुझा-बुझा-सा है

1962

129

आग लहरा के चली है उसे आँचल कर दो
तुम मुझे रात का जलता हुआ जंगल कर दो

चांद-सा मिसरा अकेला है मिरे काग़ज़ पर
छत पर आ जाओ, मिरा शेर मुकम्मल कर दो

मैं तुम्हें दिल की सियासत का हुनर देता हूँ
अब इसे धूप बना दो, मुझे बादल कर दो

अपने आँगन की उदासी से ज़रा बात करो
नीम के सूखे हुए पेड़ को सन्दल कर दो

तुम मुझे छोड़ के जाओगे तो मर जाऊँगा
यूँ करो जाने से पहले मुझे पागल कर दो

130

अब धूप भूल जाइये, सूरज यहाँ नहीं
ऐसी ज़मीं मिली है जहाँ आसमाँ नहीं

काग़ज़ पे रात अपनी सियाही बिछा गई
कोई लकीर तेरे मेरे दरमियाँ नहीं

ये राज़ अब खुला तिरी नाराज़गी के बाद
तू मेहरबाँ नहीं, तो कोई मेहरबाँ नहीं

दिल ने तुम्हारी याद में सबको भुला दिया
इस ताक़ में चराग़ है लेकिन धुआँ नहीं

जा उसका नाम लिख दे गुलाबों की शाख़ पर
फूलों के आस-पास अगर तितलियाँ नहीं

'मीरा', 'कबीर', 'चिश्ती'-ओ-'नानक' के प्यार को
जो देश भूल जाए वो हिन्दोस्ताँ नहीं

131

मेरे बारे में हवाओं से वो कब पूछेगा
ख़ाक जब ख़ाक में मिल जायेगी तब पूछेगा

घर बसाने में ये ख़तरा है के घर का मालिक
रात में देर से आने का सबब पूछेगा

अपना ग़म सबको बताना है तमाशा करना
हाले-दिल उसको सुनाएंगे वो जब पूछेगा

जब बिछड़ना भी तो हँसते हुए जाना वरना
हर कोई रूठ के जाने का सबब पूछेगा

हमने लफ़्ज़ों के जहाँ दाम लगे, बेच दिया
शे'र पूछेगा हमें अब न अदब पूछेगा

1987

132

(अमरीका-ईराक़ युद्ध पर लिखी गई ग़ज़ल)

मैं ये दुनिया मिटाना चाहता हूँ
नया सब कुछ बनाना चाहता हूँ

मैं अपनी क़ब्र में डॉलर बिछा के
ख़ुदा के पास जाना चाहता हूँ

वहाँ पानी में अब भी तेल होगा
समन्दर में नहाना चाहता हूँ

कोई कब तक जिये पाबन्दियों में
उसे मैं भूल जाना चाहता हूँ

मेरे अन्दर कोई ज़ालिम छुपा है
मैं चिड़ियाघर बनाना चाहता हूँ

1990

133

मान मौसम का कहा, छाई घटा, जाम उठा
आग से आग बुझा, फूल खिला, जाम उठा

पी मेरे यार तुझे अपनी क़सम देता हूँ
भूल जा शिकवा-गिला, हाथ मिला, जाम उठा

हाथ में जाम जहाँ आया मुक़द्दर चमका
सब बदल जायेगा क़िस्मत का लिखा, जाम उठा

एक पल भी कभी हो जाता है सदियों जैसा
देर क्या करना यहाँ, हाथ बढ़ा, जाम उठा

प्यार ही प्यार है सब लोग बराबर हैं यहाँ
मैकदे में कोई छोटा न बड़ा, जाम उठा

134

रात आँखों में ढली पलकों पे जुगनू आए
हम हवाओं की तरह जाके उसे छू आए

बस गई है मेरे एहसास में ये कैसी महक
कोई ख़ुशबू मैं लगाऊँ तेरी ख़ुशबू आए

उसने छू कर मुझे पत्थर से फिर इंसान किया
मुद्दतों बाद मेरी आँखों में आँसू आए

मेरा आईना भी अब मेरी तरह पागल है
आईना देखने जाऊँ तो नज़र तू आए

किस तक़ल्लुफ़ से गले मिलने का मौसम आया
फूल काग़ज़ के लिए कांच के बाजू आए

उन फ़क़ीरों को ग़ज़ल अपनी सुनाते रहियो
जिनकी आवाज़ में दरगाहों की ख़ुशबू आए

चंद नई ग़ज़लें

1

यार कह दे के ज़िन्दगी क्या है
इक अजब सी ये बंदगी क्या है

हुस्न जल्वों में हुई उम्र तमाम
आज ये दिल पे सादगी क्या है

एक ही तौर पर लिखे जाना
इससे ज़्यादा तो बंदगी क्या है

खुल गए अब तो फ़रेबात[1] सभी
अब तमाशाए-पीरगी[2] क्या है

पहले एहसास नहीं होता था
अब ये एहसासे-बेख़ुदी क्या है

उसने सब कुछ तुम्हें बता डाला
उसकी ये दोस्त सादगी क्या है

सुबह से शाम ताकना सागर
ये भी साहिल[3] सी ज़िन्दगी क्या है

---

1. छल-कपट
2. महात्मा होने का तमाशा
3. किनारा

2

दारू से इनकार करेगा, चल झूटे
तू बच्चों से प्यार करेगा, चल झूटे

छइयाँ छइयाँ चुल्लू चुल्लू पानी पी
दिल का दरिया पार करेगा, चल झूटे

आँसू दरिया, आँखें कश्ती मान लिया
पलकों को पतवार करेगा, चल झूटे

दिल को अब तेज़ाब से धोना पड़ता है
गंगाजल बेकार करेगा, चल झूटे

मन्दिर मस्जिद का झगड़ा हलवा पूड़ी
पूजा दुनियादार करेगा, चल झूटे

दोहों में ग़ज़लों की लटकन ठीक नहीं
लुंगी को सलवार करेगा, चल झूटे

मीर, कबीर, नज़ीर, बशीर के जलवे हैं
ग़ालिब क्या दरबार करेगा, चल झूटे

3

'बद्र', 'बशीर' सुख़नवर, नाच गली में बन्दर, अली दा मस्त क़लन्दर
शाह, वज़ीर, सिकन्दर, सब माटी के अन्दर, अली दा मस्त क़लन्दर

क्या लिखना, क्या पढ़ना, पापी पेट का भरना, बाबा सबसे डरना
क्या कॉलिज, क्या दफ़्तर! जाहिल, टीचर, अफ़सर, अली दा मस्त क़लन्दर

मजबूरी, लाचारी, मुँह देखे बेचारी, जानी माँसाहारी
छोड़ चुके तरकारी, सेब, अनार, चुक़न्दर, अली दा मस्त क़लन्दर

'मीरी' और 'कबीरी' नाम मिज़ाज बशीरी, यानी वही फ़क़ीरी
सोना, चांदी, ज़ेवर, ले जा जानी दिलबर, अली दा मस्त क़लन्दर

'फ़ैज़', 'फ़िराक़' सवारी, 'फ़ारूक़ी' सरकारी, चल 'बेकल' दरबारी
दंगल अटल बिहारी अलख निरंजन मंतर, अली दा मस्त क़लन्दर

4

सर-सर हवा में सरके है संदल की ओढ़नी
झुक-झुक पलक को चूमे है काजल की ओढ़नी

मुद्दत के बाद धूप की खेती हरी हुई
अब के बरस बरस गई बादल की ओढ़नी

मौसम से मिलता-जुलता तुम्हारा मिज़ाज है
भारी कभी दिलाई, कभी हलकी ओढ़नी

कोहरे की वादियों में उतरने लगी है रात
फिर सर्दियों ने ओढ़ ली कम्बल की ओढ़नी

रेशम की चादरों-सी वो चिकनी पहाड़ियाँ
कल धूप की ढलान से क्या ढलकी ओढ़नी

ये आज है, तू आज की चादर तलाश कर
अच्छे दिनों के वास्ते रख कल की ओढ़नी

कितने लिबास शहर बदलता है शाम तक
हर रात झिलमिलाती है जंगल की ओढ़नी

कारों से झाँकते हुए ख़ुशबू के पैरहन[1]
पैदल के वास्ते वही डीज़ल की ओढ़नी

---

1. लिबास

5

सुनसान रास्तों से सवारी न आएगी
अब धूल से अटी हुई लारी न आएगी

छप्पर के चायख़ाने भी अब ऊँघने लगे
पैदल चलो के कोई सवारी न आएगी

तहरीरो-ग़ुफ़्तगू में किसे ढूँढते हैं लोग
तस्वीर में भी शक्ल हमारी न आएगी

सर पर ज़मीन लेके हवाओं के साथ जा
आहिस्ता चलने वाले की बारी न आएगी

पहचान हमने अपनी मिटाई है इस तरह
बच्चों में कोई बात हमारी न आएगी

6

इस तरह साथ निभना है दुश्वार सा
तू भी तलवार सा, मैं भी तलवार सा

अपना रंगे-ग़ज़ल उसके रुख़सार[1] सा
दिल चमकने लगा है रुख़े-यार सा

अब है टूटा सा दिल ख़ुद से बेज़ार-सा
इस हवेली में लगता था दरबार सा

ख़ूबसूरत सी पैरों में ज़ंजीर हो
घर में बैठा रहूँ मैं गिरफ़्तार सा

मैं फ़रिश्तों की सोहबत के लायक़ नहीं
हमसफ़र कोई होता गुनहगार सा

गुड़िया, गुड्डे को बेचा ख़रीदा गया
घर सजाया गया रात बाज़ार सा

बात क्या है कि मशहूर लोगों के घर
मौत का सोग होता है त्योहार सा

ज़ीना-ज़ीना उतरता हुआ आईना
उसका लहजा अनोखा ख़नकदार सा

शाम तक कितने हाथों से गुज़रूँगा मैं
चायख़ाने में उर्दू के अख़बार सा

---

1. गाल

7

आहन में ढलती जाएगी इक्कीसवीं सदी
फिर भी ग़ज़ल सुनाएगी इक्कीसवीं सदी

बग़दाद, दिल्ली, मास्को, लंदन, के दरमियान
बारूद भी बिछाएगी इक्कीसवीं सदी

जल कर जो राख हो गईं दंगों में इस बरस
उन झुग्गियों में आएगी इक्कीसवीं सदी

इक यातरा ज़रूर हो निन्नानवे के पास
रथ पर सवार आएगी इक्कीसवीं सदी

कम्प्यूटरों से ग़ज़लें लिखेंगे बशीर बद्र
ग़ालिब को भूल जाएगी इक्कीसवीं सदी

8

भोपाल की ग़ज़ल ने वो तरज़ें निकालियाँ
ख़्वाजा के दर पे बैठी हैं अब दिल्ली वालियाँ

मौला अली के सदक़े में दो ग़ज़लें बच गईं
पी.-एच.डीयाँ ख़ुदा की क़सम चार सालियाँ

सदियों से एक बच्ची भटकती है रात में
यादों के ताक़ पर कहाँ रखी हैं बालियाँ

बेसाख़्ता[1] ग़ज़ल में तेरा नाम आ गया
हम से लिपट-लिपट गईं फूलों की डालियाँ

उर्दू के बाल-बाल में मोती पिरो गईं
अम्मी की जूतियाँ, मिरे अब्बू की गालियाँ

---

1. अनायास, ख़ुद-बख़ुद

9

बेसदा[1] ग़ज़लें न लिख वीरान राहों की तरह
ख़ामोशी अच्छी नहीं आहों-कराहों की तरह

लोग होते हैं यहाँ दो-चार घंटों के लिए
ज़िन्दगी बेख़्वाब[2] है मसरुफ़[3] राहों की तरह

तुमने दिल्ली देखी, पर दिल्ली का दुख देखा नहीं
ग़म हुकूमत कर रहे हैं कज-कुलाहों[4] की तरह

मस्जिदों में उनके दामन पर फ़रिश्तों की नमाज़
घर में रखते हैं कनीज़ें बादशाहों की तरह

हमने सब रोज़े नहीं रखे मगर उसका करम[5]
दिल मे होती हैं नमाज़ें ईदगाहों की तरह

हर क़दम आँखें बिछी हैं मैं कहाँ पाँव धरूँ
रास्ता रोके हैं शाख़ें तेरी बाँहों की तरह

'बद्र' साहिब की ग़ज़ल पर रात हम रोए बहुत
जश्ने-ग़म दिल ने मनाया ख़ानक़ाहों[6] की तरह

---

1. गूंगी, बिना किसी आवाज़ के
2. जागी हुई
3. व्यस्त
4. स्वाभिमानियों
5. दया-भाव
6. पीरों-फ़क़ीरों के निवास-स्थलों

10

चाय की प्याली में नीली टेबलेट घोली
सहमे-सहमे हाथों ने इक किताब फिर खोली

दायरे अँधेरों के, रोशनी के पोरों ने
कोट के बटन खोले, टाई की गिरह खोली

शीशे की सलाई में काले भूत का चढ़ना
बम[1] काठ का घोड़ा, नीम काँच की गोली

बर्फ़ में दबा मक्खन, मौत, रेल और रिक्शा
ज़िन्दगी, ख़ुशी, रिक्शा, रेल, मोटरें, डोली

इक किताब, चाँद और पेड़ सब के काले कालर पर
ज़हन टेप की गर्दिश मुँह में तोतो की बोली

वो नहीं मिली हम को, हुक, बटन, सरकती जीन
ज़िप के दाँत खुलते ही आँख से गिरी चोली

---

1. कोठा

11

इबादतों की तरह मैं यह काम करता हूँ
मिरा उसूल है पहले सलाम करता हूँ

मुख़ालिफ़त से मिरी शख़्सियत सँवरती है
मैं दुश्मनों का बड़ा ऐहतिराम करता हूँ

मैं अपनी जेब में अपना पता नहीं रखता
सफ़र में सिर्फ़ यही ऐहतिमाम करता हूँ

मैं डर गया हूँ बहुत सायादार पेड़ों से
ज़रा-सी धूप बिछा कर क़याम करता हूँ

मुझे ख़ुदा ने ग़ज़ल का दयार बख़्शा है
ये सल्तनत मैं मोहब्बत के नाम करता हूँ

12

धड़कन धड़कन धड़क रहा है अल्लाह तेरो नाम
पंछी पंछी चहक रहा है अल्लाह तेरो नाम

बच्चों की भोली बातों में उजली उजली धूप
ग़ुंचा ग़ुंचा चटक रहा है अल्लाह तेरो नाम

पतझड़ भीगे चांद नहाए पहली पहली बारिश
आँसू आँसू ढलक रहा है अल्लाह तेरो नाम

हर गर्मी सर्दी की शिद्दत में रहमत की शाल
मौसम मौसम चहक रहा है अल्लाह तेरो नाम

अम्बर सोना, धरती चांदी, माटी हीरा मोती
बाहर भीतर चमक रहा है अल्लाह तेरो नाम

झिलमिल झिलमिल रौशन आँखें रोते हँसते बच्चों की
मोती मोती चमक रहा है अल्लाह तेरो नाम

सात समंदर की गहराई पानी की तहरीर
लहर लहर में लहक रहा है अल्लाह तेरो नाम

जमना जी के तट पर गूँजे तेरे नाम की मुरली
गंगा जी में झलक रहा है अल्लाह तेरो नाम

मंदिर मस्जिद बनते हैं बनते-बनते मिट जाते हैं
चमक रहा था, चमक रहा है अल्लाह तेरो नाम

13

ग़ज़ालाँ![1] देखना दिलदार तारों की अटारी में
मिरे नैनों के दोनों पट खुले हैं इन्तिज़ारी में

कभी कहते हो अब आए, कभी कहते हो तब आए
हमारी जान जाएगी तुम्हारी इन्तिज़ारी में

हमन को आशिक़ी की आग फूलों में बसाती है
फ़रिश्ते राख हो जाते हैं सूरज की सवारी में

परिन्दों के शिकाराँ से ख़ुदा नाराज़ होवे है
किसी दिन चांद को ज़ख़्मी करोगे चांद-मारी में

ख़िज़ाँ की घास पर छलकाट की चादर बिछा दी है
बटन सोने से टाँके हैं तुम्हारी छोलदारी में

तुम्हारे हाथ में मशरिक़,[2] तुम्हारे पाँव पर मग़रिब[3]
दुपट्टा और कंगन क्या जमे जानाँ सफ़ारी में

---

1. ऐ मृग-शावकों!
2. पूर्व दिशा
3. पश्चिम

14

अलिफ़ अलिफ़ है उसे शीन क़ाफ़ करते नहीं
दिलो-दिमाग़ मेरे इख़्तिलाफ़ करते नहीं

ज़हीन साँप सदा आस्तीं में रहते हैं
ज़ुबाँ से कहते हैं, दिल से मुआफ़ करते नहीं

ये दिल है, कमरे की बत्ती बुझा के सोता है
मगर दिमाग़ का हम 'मेन ऑफ़' करते नहीं

कहो तो ओस बिछा दूँ शहर की पलकों पर
ग़ज़ल ग़ज़ल है इसे हम लिहाफ़ करते नहीं

ख़िराज लेते हैं लेकिन ज़रा सलीक़े से
किसी वज़ीर के घर का तवाफ़ करते नहीं

वो जानते हैं चराग़ों में कौन जलता है
मगर ज़ुबाँ से अभी ऐतिराफ़ करते नहीं

'असद' से कहियो कि अब तर्जुमे हज़फ़ कर दें
कि 'डुप्लीकेट' का हम ऐतिराफ़ करते नहीं

15

चांद को चांदनी दिखाऊँ क्या
उस ग़ज़ल को ग़ज़ल सुनाऊँ क्या

नींद तारों को आ रही है बहुत
अपने घर का पता बताऊँ क्या

कल्पना खो गयी है तारों में
अपनी बच्ची को ढूँढ लाऊँ क्या

हर तरफ़ कार, रेल और बसें
अब समुन्दर में घर बनाऊँ क्या

आज सण्डे है, कल भी छुट्टी है
आसमानों में घूम आऊँ क्या

ख़ूबसूरत बहुत है, मान लिया
बाल-बच्चों को भूल जाऊँ क्या

(डॉ. बशीर बद्र द्वारा लिखी अब तक की आख़िरी ग़ज़ल)

16

कहाँ पर है मंज़िल ख़बर ही नहीं
ग़ज़ल हमसफ़र है तो डर ही नहीं

वह प्यारा है सबका, सभी उसके हैं
किसी शहर में उसका घर ही नहीं

सुब्ह शाम दिन रात ख़ामोश हैं
किसी बात का, कुछ असर ही नहीं

वह उड़ने को बेचैन है इस क़दर
मगर क्या करे, बालो-पर ही नहीं

मोहब्बत की छत है ये 'राहत' का घर
जो बँट जाएं, दीवारो-दर ही नहीं

(डॉ. राहत बद्र की और से डॉ. बशीर बद्र की नज़र)

चुनिन्दा शेर

(1)

उजाले अपनी यादों के हमारे साथ रहने दो
न जाने किस गली में ज़िन्दगी की शाम हो जाए

(2)

लोग टूट जाते हैं एक घर बनाने में
तुम तरस नहीं खाते बस्तियाँ जलाने में

(3)

दुश्मनी जम कर करो लेकिन ये गुंजाइश रहे
जब कभी हम दोस्त बन जायें तो शर्मिंदा न हों

(4)

हम भी दरिया हैं, हमें अपना हुनर मालूम है
जिस तरफ़ भी चल पड़ेंगे रास्ता हो जाएगा

(5)

मुसाफ़िर हैं हम भी, मुसाफ़िर हो तुम भी
किसी मोड़ पर फिर मुलाक़ात होगी

(6)

दुश्मनी का सफ़र, एक क़दम दो क़दम
तुम भी थक जाओगे, हम भी थक जायेंगे

(7)

बड़े लोगों से मिलने में हमेशा फ़ासला रखना
जहाँ दरिया समन्दर में मिला दरिया नहीं रहता

(8)

लहरों पे एक दिन तेरी तस्वीर आएगी
काग़ज़ को हमने आज नदी में बहा दिया

(9)

गुलाबों की तरह शबनम में अपना दिल भिगोते हैं

मुहब्बत करने वाले ख़ूबसूरत लोग होते हैं

(10)

घड़ी दो घड़ी हम को पलकों पे रख
यहाँ आते आते ज़माने लगे

(11)

देने वाले ने दिया सब कुछ अजब अंदाज़ से
सामने दुनिया पड़ी है और उठा सकते नहीं

(12)

कईं सितारों को मैं जानता हूँ बचपन से
कहीं भी जाऊँ मिरे साथ-साथ चलते हैं

(13)

यहाँ लिबास की क़ीमत है, आदमी की नहीं
मुझे गिलास बड़े दे, शराब कम कर दे

(14)

फूल सी क़ब्र से अक्सर ये सदा आती है
कोई कहता है बचालो मैं अभी ज़िन्दा हूँ

(15)

पलकें भी चमक उठती हैं सोते में हमारी
आँखों को अभी ख़्वाब छुपाने नहीं आते

(16)

अज़ीम दुश्मनों चाक़ू चलाओ मौक़ा है
हमारे हाथ हमारी कमर के पीछे हैं

(17)

इबादतों की तरह मैं ये काम करता हूँ
मिरा उसूल है पहले सलाम करता हूँ

(18)

किसने जलाई बस्तियाँ बाज़ार क्यों लुटे
मैं चाँद पर गया था मुझे कुछ पता नहीं

(19)

मुख़ालिफ़त से मिरी शख़्सियत सँवरती है
मैं दुश्मनों का बड़ा एहतेराम करता हूँ

(20)

मैं डर गया हूँ बहुत सायादार पेड़ों से
ज़रा सी धूप बिछा कर क़याम करता हूँ

(21)

मुझे ख़ुदा ने ग़ज़ल का दयार बख़्शा है
ये सल्तनत मैं मुहब्बत के नाम करता हूँ

(22)

ज़मीं माँ भी है, महबूब भी है, बेटी भी
ज़मीं छोड़ के जाऊँ कोई सवाल नहीं

(23)

पहले से कुछ साफ़ नज़र आई दुनिया
जब से हमने आँखों पर पट्टी बांधी

(24)

ये परिन्दें भी खेतों के मज़दूर हैं
लौटकर शाम तक अपने घर जाएंगे

(25)

फूल सी उंगलियाँ कंघियाँ बन गईं
उलझे बालों से माथा ढँका देखकर

(26)

दरवाज़े आस्मान के खुलने दो दोस्तों
निकलेगा मुस्कुराता हुआ, शामे-ग़म का चांद

(27)

जो कहूँगा सच कहूँगा यही फैसला किया है
जो लिखूँगा सच लिखूँगा यही फैसला किया है

(28)

क्यों हवेली के उजड़ने का मुझे अफ़सोस हो
सैकड़ों बेघर परिंदों के ठिकाने हो गये

(29)

मिटा दिये हैं सभी फ़ासले मोहब्बत ने
मिरा दिमाग़ धड़कता है मेरे दिल की तरह

(30)

नफ़रत को मोहब्बत का एक शेर सुनाता हूँ
मैं लाल पिसी मिर्चें पलकों से उठाता हूँ

(31)

मंदिर मस्जिद बनते हैं बनते बनते मिट जाते हैं
चमक रहा था चमक रहा है अल्लाह तेरो नाम

(32)

हज़ारों शेर मेरे सो गये काग़ज़ की क़ब्रों में
अजब माँ हूँ कोई बच्चा मिरा ज़िन्दा नहीं रहता

(33)

काग़ज़ का ये लिबास चराग़ों के शहर में
जानाँ संभल-संभल के चलो तुम नशे में हो

(34)

मासूम तितलियों को मसलने का शौक़ है
तौबा करो, ख़ुदा से डरो तुम नशे में हो

(35)

यही अंदाज़ है मिरा समन्दर फ़तह करने का
मिरी काग़ज़ की कश्ती में कई जुगनू भी होते हैं

(36)

इमारतों की बुलन्दी पे कोई मौसम क्या
कहाँ से आ गई कच्चे मकान की ख़ुशबू

(37)

मुझको शाम बता देती है
तुम कैसे कपड़े पहने हो

(38)

मुझसे बिछड़ के ख़ुश रहते हो
मेरी तरह तुम भी झूठे हो

(39)

धूप कब तक मुझे सताएगी
कल मिरे पेड़ भी बड़े होंगे

(40)

रात का इंतज़ार कौन करे
आजकल दिन में क्या नहीं होता

(41)

आपका शहर ख़ूबसूरत है
क्या यहाँ आदमी नहीं रहते

(42)

पढ़ाई लिखाई का मौसम कहाँ
किताबों में ख़त आने जाने लगे

(43)

बारिशों में किसी पेड़ को देखना
शाल ओढ़े हुए भीगता कौन है

(44)

न जी भर के देखा न कुछ बात की
बड़ी आरज़ू थी मुलाक़ात की

(45)

ख़ुदा इस शहर को महफ़ूज़ रखे
ये बच्चों की तरह हँसता बहुत है

(46)

इजाज़त हो तो मैं इक झूठ बोलूँ
मुझे दुनिया से नफ़रत हो गई है

(47)

घर नया, बर्तन नये, कपड़े नये
इन पुराने काग़ज़ों का क्या करें

(48)

वो ख़ुद हारे हुए हैं ज़िन्दगी से
जो दुनिया पर हुकूमत कर रहे हैं

(49)

मेरी मुट्ठी में सूखे हुए फूल हैं
ख़ुशबुओं को उड़ाकर हवा ले गई

(50)

ख़ुदा, महबूब, शौहर, बाल बच्चे
ग़ज़ल दिलदार औरत हो गई

(51)

हुई शाम यादों के इक गाँव से
परिन्दे उदासी के आने लगे

(52)

रात सर पे लिए हूँ जंगल में
रास्ते की ख़राब बस की तरह

(53)

सात पर्दों में छुप कर देख लिया
कपड़े बदलो तो देखता है कोई

(54)

ऐब पुराने घर का ये ही है बाबा
कोई आए न आए घंटी बजती है

(55)

अब किसे चाहें, किसे ढूँढा करें
वो भी आख़िर मिल गया, अब क्या करें

(56)

कुछ तो मजबूरियाँ रही होंगी
यूँ कोई बेवफ़ा नहीं होता

(57)

चराग़ों को आँखों में महफ़ूज़ रखना
बड़ी दूर तक रात ही रात होगी

(58)

ग़ज़लें अब तक शराब पीती थीं
नीम का रस पिला रहे हैं हम

(59)

उसे उर्दू में तुमने ख़त लिखा है
तुम्हारी इतनी हिम्मत हो गई है

(60)

ख़ुदा ऐसे एहसास का नाम है
रहे सामने और दिखाई न दे

(61)

शीशे का ताज सर पे रखे आ रही थी रात
टकराई हम से चांद सितारे बिखर गये

(62)

सुनसान रास्तों की सवारी न आयेगी
अब धूल की अटी हुई लारी न आयेगी

(63)

पसीना बंद कमरे की उमस का जज़्ब है इसमें
हमारे तौलिये में धूप की ख़ुशबू कहाँ होगी

(64)

कारों से झांकते हुए ख़ुशबू के पैरहन
पैदल के वास्ते वही डीज़ल की ओढ़नी

(65)

रात तारों से उलझ सकती है ज़र्रों से नहीं
रात को मालूम है जुगनू में हिम्मत है बहुत

(66)

मैं ख़ुदा का नाम लेकर पी रहा हूँ दोस्तों
ज़हर भी इसमें अगर होगा दवा हो जाएगा

(67)

तुम्हारे साथ ये मौसम फ़रिश्तों जैसा है
तुम्हारे बाद ये मौसम बहुत सताएगा

(68)

वो शाख़ है न फूल अगर तितलियाँ न हो
वो घर भी कोई घर है जहाँ बच्चियाँ न हो

(69)

उस बच्चे की कॉपी अक्सर पढ़ता हूँ
सूरज के माथे पर जिसने शाम लिखा

(70)

उसे ये शौक़ था हर रात एक नया हो बदन
दलाल अब के जो लाया उसी की बेटी थी

(71)

उदासी पतझड़ों की शाम ओढ़े रास्ता तकती
पहाड़ी पर हज़ारों साल की कोई इमारत सी

(72)

उतर भी आओ कभी आसमाँ के ज़ीने से
तुम्हें ख़ुदा ने हमारे लिए बनाया है

(73)

मेरी आँख के तारे अब न देख पाओगे
रात के मुसाफ़िर थे, खो गए उजालों में

(74)

मैं मुहब्बत से महकता हुआ ख़त हूँ मुझको
ज़िन्दगी अपनी किताबों में दबाकर ले जाए

(75)

बे-वक़्त अगर जाऊँगा, सब चौंक पड़ेंगे
इक उम्र हुई दिन में कभी घर नहीं देखा

(76)

सितारे राह के हैं मीरो-ग़ालिब-ओ-इक़बाल
क़लम हूँ बच्चे का, तख़्ती नई, नई हूँ मैं

(77)

जैसे जैसे उम्र भीगी सादा पोशाकी गई
सूट पीला, शर्ट नीली, टाई धानी हो गई

(78)

रात तेरी यादों ने दिल को इस तरह छेड़ा
जैसे कोई चुटकी ले नर्म नर्म गालों में

(79)

बादल हवा की जद पे बरस कर बिखर गये
अपनी जगह चमकता हुआ आफ़ताब है

(80)

मैंने समझाया कि सूरज भी झुकेगा दर पर
वर्ना तारों की तरफ़ मुँह किए दरवाज़े थे

(81)

घर कितने ही छोटे हों, घने पेड़ मिलेंगे
शहरों से अलग होती है क़स्बात की ख़ुशबू

(82)

हिंदू बनो तो मथुरा, मुस्लिम बनो तो मक्का,
इन्साँ अगर रहो तो सारा जहाँ तुम्हारा

(83)

शोहरत की बुलन्दी भी पल भर का तमाशा है
जिस डाल पे बैठे हो, वो टूट भी सकती है

(84)

मैं चुप रहा तो और ग़लत-फ़हमियाँ बढ़ीं
वो भी सुना है उसने, जो मैंने कहा नहीं

(85)

मैं तमाम तारे उठा-उठा के ग़रीब लोगों में बाँट दूँ
कभी एक रात वो आसमाँ का निज़ाम दे मिरे हाथ में

(86)

मकाँ से क्या मुझे लेना मकाँ तुमको मुबारक हो
मगर ये घास वाला रेश्मी क़ालीन मेरा है

(87)

मुझको उन सच्ची बातों से अपने झूठ बहुत प्यारे हैं
जिन सच्ची बातों से सदियों इन्सानों का ख़ून बहा है

(88)

फूल सी बच्ची ने मेरे हाथ से छीना गिलास
आज अम्मी की तरह वो पूरी औरत सी लगी

(89)

इस रूमाल को काम में लाओ, अपनी पलकें साफ़ करो
मैला मैला चाँद नहीं है, धूल जमी है आँखों में

(90)

वो अनपढ़ था फिर भी उसने पढ़े लिखे लोगों से कहा
इक तस्वीर, कई ख़त भी हैं, साहिब आप की रद्दी में

(91)

धूप में छाँव हो, छाँव में धूप हो, चांदनी चांदनी चाहत रहे
ये दुआ है ख़ुदा, मेरा अच्छा सनम, मेरी अच्छी सी दुनिया सलामत रहे

(92)

मुझे पतझड़ों की कहानियाँ न सुना सुना के उदास कर
नए मौसमों का पता बता जो गुज़र गया सो गुज़र गया

(93)

अगर फ़ुर्सत मिले पानी की तहरीरों को पढ़ लेना
हर इक दरिया हज़ारों साल का अफ़साना कहता है

(94)

आँखें खोल के बाहें डालो, यूँ खो जाना ठीक नहीं
नाग भी लिपटे रहते हैं पीपल की नर्म जटाओं में

(95)

बद्र तुम्हारी फ़िक्रे सुख़न पर इक अल्लामा हँस कर बोले
वो लड़का, नौ उम्र परिन्दा, ऊँचा उड़ना सीख रहा है

(96)

हमने तो बाज़ार की दुनिया बेची और ख़रीदी है
हमको क्या मालूम किसी को कैसे चाहा जाता है

(97)

यारो सोना चाँदी बोकर, सोना चाँदी काटो, जाओ
हमने आँसू की खेती की, नैन नगर आबाद किया है

(98)

कभी यूँ भी आ मिरी आँख में कि मिरी नज़र को ख़बर न हो
मुझे एक रात नवाज़ दे, मगर उसके बाद सहर न हो

(99)

उसे पाक नज़रों से चूमना भी इबादतों में शुमार है
कोई फूल लाख क़रीब हो, कभी मैंने उसको छुआ नहीं

(100)

ज़िन्दगी तिरी फ़िक्रें खिलते ही गुलाबों का रस निचोड़ लेती है
फूल जैसी उम्रों के सोचते हुए बच्चे बूढ़े होते जाते हैं

(101)

इसी शहर में कई साल से मिरे कुछ क़रीबी अज़ीज़ हैं
उन्हें मेरी कोई ख़बर नहीं मुझे उनका कोई पता नहीं

(102)

कभी सात रंगों का फूल हूँ कभी धूप हूँ कभी धूल हूँ
मैं तमाम कपड़े बदल चुका तिरे मौसमों की बरात में

(103)

मोहब्बत से, इनायत से, वफ़ा से चोट लगती है
बिखरता फूल हूँ, मुझको हवा से चोट लगती है

(104)

एक गाँव में दो बारातें, शायद दूल्हा बदल गया
मेरी आँख में तेरा आँसू, तेरी आँख में मेरा आँसू

(105)

कभी तो आसमाँ से चांद उतरे जाम हो जाए
तुम्हारे नाम की इक ख़ूबसूरत शाम हो जाए

(106)

किसी ने चूम के आँखों को ये दुआ दी थी
ज़मीन तेरी ख़ुदा मोतियों से नम कर दे

(107)

हर रोज़ हमें मिलना, हर रोज़ बिछड़ना है
मैं रात की परछाईं, तू सुबह का चेहरा है

(108)

मेरा ये अहद है कि आज से मैं कोई मंज़र ग़लत न देखूंगा
मेरी बेटी ने मेरी पलकों को कितनी पाकीज़गी से चूमा है

(109)

हम शरीफ़ों की ज़रा मजबूरियाँ समझा करो
जिसको अच्छा कह दिया उसको बुरा कैसे कहें

(110)

उसे किसी की मुहब्बत का एतिबार नहीं
उसे ज़माने ने शायद बहुत सताया है

(111)

मैं आग था फूलों में तब्दील हुआ कैसे
बच्चों की तरह किसने चूमा मिरे गालों को

(112)

कह देना समन्दर से हम ओस के मोती हैं
दरिया की तरह तुझसे मिलने नहीं आयेंगे

(113)

वो ज़ाफ़रानी पुलोवर उसी का हिस्सा है
कोई जो दूसरा पहने, तो दूसरा ही लगे

(114)

ख़ुदा की इतनी बड़ी कायनात में मैंने
बस एक शख़्स को माँगा, मुझे वही न मिला

(115)

दिल की बस्ती पुरानी दिल्ली है
जो भी गुज़रा उसी ने लूटा है

(116)

जी बहुत चाहता है सच बोलें
क्या करें हौसला नहीं होता

(117)

आसमाँ भर गया परिन्दों से
पेड़ कोई हरा गिरा होगा

(118)

मोहब्बत, अदावत, वफ़ा, बेरूख़ी
किराए के घर थे बदलते रहे

(119)

आज हम सबके साथ ख़ूब हँसे
और फिर देर तक उदास रहे

(120)

उसका भी कुछ हक़ है आख़िर
उसने मुझसे नफ़रत की है

(121)

तुम अभी शहर में क्या नए आये हो
रुक गए राह में हादसा देखकर

(122)

थके थके पैडिल के बीच चले सूरज
घर की तरफ़ लौटी, दफ़्तर की शाम

(123)

सब खिले हैं किसी के गालों पर
इस बरस बाग़ में गुलाब कहाँ

(124)

ज़ख़्म खाते रहो, मुस्कुराते रहो
अपनी अमरीका से दोस्ती हो गई

(125)

मुतमइन हैं ज़रा अमीरो ग़रीब
हर मुसीबत मिडिल क्लास की है

(126)

फ़ूल जैसे ख़ूबसूरत ग़म मिले
ज़िन्दगी से क्या गिला शिकवा करें

(127)

ग़ज़लों का हुनर अपनी आँखों को सिखाएंगे
रोयेंगे बहुत लेकिन आँसू नहीं आएंगे

(128)

वो चाँदनी का बदन, ख़ुशबुओं का साया है
बहुत अज़ीज़ हमें है मगर पराया है

(129)

मुझे मालूम है उसका ठिकाना फिर कहाँ होगा
परिन्दा आसमाँ छूने में जब नाकाम हो जाए

(130)

मुहब्बतों में दिखावे की दोस्ती न मिला
अगर गले नहीं मिलता तो हाथ भी न मिला

(131)

सर झुकाओगे तो पत्थर देवता हो जाएगा
इतना मत चाहो उसे, वो बेवफ़ा हो जाएगा

(132)

अब मिले हम तो कई लोग बिछड़ जायेंगे
इन्तज़ार और करो अगले जनम तक मेरा

(133)

ज़िन्दगी तूने मुझे क़ब्र से कम दी है ज़मीं
पाँव फैलाऊँ तो दीवार में सर लगता है

(134)

परखना मत, परखने में कोई अपना नहीं रहता
किसी भी आईने में देर तक चेहरा नहीं रहता

(135)

इक मीर था सो आज भी काग़ज़ में क़ैद है
हिन्दी ग़ज़ल का दूसरा अवतार मैं ही हूँ

(136)

चमकती है कहीं सदियों मे आँसुओं से ज़मीं
ग़ज़ल के शेर कहाँ रोज़ रोज़ होते हैं

(137)

फूल से आशिक़ी का हुनर सीख ले
तितलियाँ ख़ुद रुकेंगी सदाएं न दे

(138)

इतनी सियाह रात में किसको सदाएँ दूँ
ऐसा चिराग़ दे जो कभी बोलता भी हो

(139)

अल्लाह ने नवाज़ दिया है तो ख़ुश रहो
तुम क्या समझ रहे हो ये शोहरत ग़ज़ल से है

(140)

जिस दिन से चला हूँ मिरी मंज़िल पे नज़र है
आँखों ने कभी मील का पत्थर नहीं देखा

(141)

उन्हीं रास्तों ने, जिन पर कभी तुम थे साथ मेरे
मुझे रोक-रोक पूछा, तिरा हमसफ़र कहाँ है

(142)

चांद चेहरा, ज़ुल्फ़ दरिया, बात ख़ुशबू, दिल चमन
इक तुम्हें देकर ख़ुदा ने दे दिया क्या-क्या मुझे

(143)

उसके लिए तो मैंने यहाँ तक दुआएं कीं
मेरी तरह से कोई उसे चाहता भी हो

(144)

आँखों में रहा, दिल में उतर कर नहीं देखा
कश्ती के मुसाफ़िर ने समन्दर नहीं देखा

(145)

पत्थर मुझे कहता है मिरा चाहने वाला
मैं मोम हूँ, उसने मुझे छूकर नहीं देखा

(146)

इस तरह साथ निभना है दुश्वार-सा
मैं भी तलवार-सा, तू भी तलवार-सा

(147)

इतनी मिलती है मेरी ग़ज़लों से सूरत तेरी
लोग तुझको मिरा महबूब समझते हांगे

(148)

किसे मालूम था हम दोनों इक बिस्तर पे सोएंगे
हिफ़ाज़त के लिए तलवार अपने दरम्याँ होगी

(149)

वो बाल्कोनी में आए तो रास्ता रुक जाए
सड़क पे चलने लगे तो हमारे जैसा है

(150)

सात संदूक़ों में भर कर दफ़्न कर दो नफ़रतें
आज इन्सान को मोहब्बत की ज़रूरत है बहुत

(151)

सच सियासत से अदालत तक बहुत मसरूफ़ है
झूठ बोलो, झूठ में अब भी मोहब्बत है बहुत

(152)

वो ग़ज़ल वालों का उस्लूब समझते हांगे
चांद कहते हैं किसे ख़ूब समझते होंगे

(153)

मुझसे क्या बात लिखानी है कि अब मेरे लिए
कभी सोने, कभी चाँदी के क़लम आते हैं

(154)

अजब चराग़ हूँ दिन रात जलता रहता हूँ
मैं थक गया हूँ, हवा से कहो बुझाए मुझे

(155)

उन से ज़रूर मिलना सलीक़े के लोग हैं
सर भी क़लम करेंगे बड़े एहतेराम से

(156)

चांद सा मिसरा अकेला है मिरे काग़ज़ पर
छत पर आजाओ मेरा शेर मुकम्मल कर दो

(157)

उसने छूकर मुझे पत्थर से फिर इन्सान किया
मुद्दतों बाद मिरी आँखों में आँसू आए

(158)

बारिशें छत पे खुली जगहों पे होती हैं मगर
ग़म वो सावन है जो इन कमरों के अंदर बरसे

(159)

आख़िरी बेटी की शादी करके सोई रात भर
सुब्ह बच्चों की तरह वो ख़ूबसूरत सी लगी

(160)

चिड़ियों के लिए चावल पौधों के लिये पानी
थोड़ी सी मुहब्बत दे हम चाहने वालों को

(161)

साथ चलते जा रहे हैं पास आ सकते नहीं
इक नदी के दो किनारों को मिला सकते नहीं

(162)

मेरे होंटों पे तेरी ख़ुशबू है
छू सकेगी इन्हें शराब कहाँ

(163)

भरी दोपहर का फूल खिला है
पसीने में लड़की नहाई हुई

(164)

दिल की ख़ामोशी पे न जाओ
राख के नीचे आग दबी है

(165)

झिलमिलाते हैं कश्तियों में दिये
पुल खड़े सो रहे हैं पानी में

(166)

फूल सा कुछ कलाम और सही
इक ग़ज़ल उसके नाम और सही

(167)

धड़कनें दफ़्न हो गई होंगी
दिल में दीवार क्यों खड़ी कर ली

(168)

देखो वो फिर आ गई फूलों पे तितलियाँ
इक रोज़ वो भी आयेगा अफ़सोस मत करो

(169)

नीला सफ़ेद कोट ज़मीं पर बिछा रहा
वो मुझको आसमान पे ले कर चली गई

(170)

मैं आसमान-ओ-ज़मीं की हदें मिला देता
कोई सितारा अगर झुक के चूमता मुझको

(171)

दिल्ली हो कि लाहौर कोई फ़र्क़ नहीं है
सच बोल के हर शहर में ऐसे ही रहोगे

(172)

इक पल कि ज़िन्दगी मुझे बेहद अज़ीज़ है
पलकों पे झिलमिलाऊँगा और टूट जाऊँगा

(173)

तुम्हारे घर के सभी रास्तों को काट गई
हमारे हाथों में कोई लकीर ऐसी थी

(174)

उड़ने दो परिन्दों को अभी शोख़ हवा में
फिर लौट के बचपन के ज़माने नहीं आते

(175)

फ़ाख़्ता की मजबूरी ये भी कह नहीं सकती
कौन साँप रखता है उसके आशियाने में

(176)

भीगी हुई आँखों का ये मंज़र न मिलेगा
घर छोड़ के मत जाओ कहीं घर न मिलेगा

(177)

दूसरी कोई लड़की ज़िन्दगी में आएगी
कितनी देर लगती है उसको भूल जाने में

(178)

इरादे हौसले, कुछ ख़्वाब कुछ भूली हुई यादें
ग़ज़ल के एक धागे में कई मोती पिरोए हैं

(179)

बात क्या है कि मशहूर लोगों के घर
मौत का सोग होता है त्योहार सा

(180)

अपनी शोहरत से दूर रहता हूँ
ये बड़ी बद मिज़ाज औरत है

(181)

दोस्तों से वफ़ा की उम्मीदें
किस ज़माने के आदमी हो तुम

(182)

एक दिन तुझसे मिलने ज़रूर आऊँगा
ज़िन्दगी मुझको तिरा पता चाहिये

(183)

इक दूजे से मिलकर पूरे होते हैं
आधी आधी एक कहानी हम दोनों

(184)

दुनिया भर के शहरों का कल्चर यक्साँ
आबादी तन्हाई बनती जाती है

(185)

एक मैं, एक तुम, एक दीवार थी
ज़िन्दगी आधी आधी बँटी रह गई

(186)

सर पे ज़मीन लेके हवाओं के साथ जा
आहिस्ता चलने वालों की बारी न आएगी

(187)

सात ज़मीनें, एक सितारा नया नया
सदियों बाद ग़ज़ल ने कोई नाम लिखा

(188)

आपके पास ख़रीदारी की क़ुव्वत है अगर
आज सब लोग दुकानों में सजे रखे हैं

(189)

ये फूल मुझे कोई विरासत में मिले हैं
तुमने मिरा काँटों भरा बिस्तर नहीं देखा

(190)

सियासत की अपनी अलग इक ज़ुबान है
लिखा हो जो इक़रार इन्कार पढ़ना

(191)

हम पहले नर्म पत्तों की इक शाख़ थे मगर
काटे गये हैं इतना कि तलवार हो गए

(192)

ये एक पेड़ है आ इससे मिलके रो लें हम
यहाँ से तेरे मेरे रास्ते बदलते हैं

(193)

झुकी पलकें, घने गेसू, हसीं दामन, सुबुक़ आँचल
जहाँ की तपती राहों में ये साये याद आते हैं

(194)

शफ़्फ़ाक आँखें, तेज़ ट्रक की मुझे लगा
इक मौत का फ़रिश्ता था हँसता गुज़र गया

(195)

आज की शाम दोबारा न कभी आयेगी
आज की शाम न ये सोच के कल क्या होगा

(196)

पागल सी इक लड़की ने शायर बना दिया
ये शायरी भी है उसी पागल की ओढ़नी

(197)

पत्थर के जिगर वालो ग़म में वो रवानी है
ख़ुद राह बना लेगा, बहता हुआ पानी है

(198)

जब उसकी नवाज़िश होती है ये मोजज़ा तब हो जाता है
अल्फ़ाज़ महकने लगते हैं, काग़ज़ भी अदब हो जाता है

(199)

कोई हाथ भी न मिलाएगा जो गले मिलोगे तपाक से
ये नए मिज़ाज का शहर है ज़रा फ़ासले से मिला करो